



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० ५७]

नई दिल्ली, बुहुस्पतिवार, मार्च १, १९७९/फालगुन १०, १९००

No. 57]

NEW DELHI, THURSDAY, MARCH 1, 1979/PHALGUNA 10, 1900

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

वित्त मंत्रालय

(प्राधिक कार्य विभाग)

(बजट अनुसार)

बजट 1979-80

उप-प्रधान मंत्री और वित्त मंत्री का आषण

[सं० एफ० १८ (८५)—बी० (डी०)/७८]

नई दिल्ली, २८ फरवरी, १९७९

महोदय,

मैं 1979-80 का बजट पेश करने के लिए उपस्थित हुआ हूँ।

२. चालू वर्ष के दौरान अर्थ-व्यवस्था की जो प्रवृत्तियाँ रही है उनका विस्तृत विवरण कुछ दिन पहले मदन में प्रस्तुत की गई १९७८-७९ की "प्राधिक समीक्षा" में दिया गया है। इसलिए मैं अपने विचारों को अधिक स्थिति के ऐसे कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं तक ही सीमित रखूँगा जिनके मन्त्रभर्त में यह बजट लैयार किया गया है।

३. चालू वर्ष के दौरान भारतीय अर्थ-व्यवस्था की प्रगति बहुत मस्तूवजनक रही है। कृषि का उत्पादन लगानार दूसरे वर्ष फिर सर्वोच्च स्तर (रेकॉर्ड लेवल) पर हुआ है। यह सफलतापूर्ण रूप से अनुकूल मौसमी कारणों से ही नहीं मिली है। उत्पादन बढ़ने का एक काफी बड़ा कारण यह भी रहा कि सिवाई और उर्वरक अधिक मात्रा में उपलब्ध हुए, उनक बीजों का इस्तेमाल किया गया, अनुभंधान और विस्तार भवनी कार्यक्राम में बृद्धि की गई और कीमत समर्पण (प्राइवेट सप्पोर्ट) तथा अनाज की खरीद का काम बढ़ाया गया। यह प्रगति काफी हद

तक उन लागतों किसानों को नाकत और मेहनत की बदौलत हुई है जिन्होंने इन कार्यों में अपनी पूँजी लगाई है, नई प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) का इस्तेमाल किया है, खेतों के नए तरीके अपनाए हैं और एक की जगह दो वानियां वैदा करके सर्वेक्षणात्मक के हित में योगदान दिया है।

४. जब तक देश में खासी और बेरोजगारी कैंसी हुई है और जब तक खेती में रोजगार पैदा करने और अधिकांश लोगों को कप-शक्ति प्रदान करने की सबसे अधिक क्षमता है, तब तक खेती के मुधार के काम में कोई छिलाई नहीं बरती जा सकती। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि हम उपर श्रौद्योगिकी और कृषि उपयोगी वस्तुओं का अधिक इस्तेमाल करके उत्पादकता को और ज्यादा बढ़ाएं। इसके लिए अधिक पूँजी निवेश (इन्वेस्टमेंट), बड़े पैमाने पर नर्ह-नरह के प्रयत्न और बेहतर संगठन की ज़रूरत है।

५. आशा है कि चालू वर्ष के दौरान श्रौद्योगिक उत्पादन में भी ७ से ८ प्रतिशत की वृद्धि होगी। यह बहुत-से उद्योगों के उत्पादन में मुधार होने से सम्भव हुआ है। आसीनी से, विजली उत्पादन, खाद्य उद्योगों, धारु उत्पादों, विजली की और बगर विजली की मणीनों, बस्तों और परिवहन उपकरण के उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई है। सीमेंट, उर्वरक, इस्पान और अलौह धारुओं जैसी बुनियादी वस्तुओं की कुल उपलब्धि को बढ़ी मात्रा में आयात के द्वारा बढ़ाया गया ताकि हन वस्तुओं की कमी के कारण देश के विकास में कोई बाधा उपस्थित न हो।

६. यदि आने वाले वर्ष में भी कृषि और उद्योगों के उत्पादन में इसी दर से वृद्धि करते रहता है तो अधिक पूँजी निवेश करके बुनियादी वस्तुओं को अधिक मात्रा में उपलब्ध कराना होगा। इसीलिए सरकार

विवाई, विजली उत्पादन, सीमेन्ट, इस्पात, उर्वरक और परिवहन में भारी पूँजी निवेश के कार्यक्रम के साथ आगे बढ़ रही है।

7. सरकार पिछले साल की तरह इस साल भी कीमतों में स्थिरता बनाए रख सकी है। 10 फरवरी, 1979 को थोक कीमतों का यूनिक अंक, एक साल पहले के स्तर से, केवल 0.9 प्रतिशत और दो साल पहले के स्तर से 0.4 प्रतिशत ऊपर था। एक ऐसी अवधि में जबकि राष्ट्रीय आय में लगातार 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई हो, कीमतों में इनी अधिक स्थिरता रख पाने का रेकार्ड बनाया में और कहीं मिलता कठिन होगा। यह स्थिरता पूर्ण और मांग के प्रबन्ध की मुविचास्ति नीतियों के अन्य प्राप्त की जा सकी है। इस सम्बन्ध में यह बताना भी जरूरी है कि वह हुए हैं और औद्योगिक उत्पादन तथा महत्वपूर्ण खेतों के लिए अपनाई गई उदार आयात नीति ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। साथ ही एक ऐसी मौद्रिक नीति का पालन किया गया है जो जहां के प्रवाह को अर्थ-व्यवस्था में सटेवाली की गतिविधियों की ओर जाने से रोकती है और जहां को उत्पादक क्षेत्रों की ओर प्रवाहित करती है।

8. पूँजी निवेश के कार्यक्रम को बढ़ाने के लिए साधनों को बढ़ाना भी जरूरी है। परस्तु ऐसा प्रतीत होता है कि साधनों का संग्रह आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं हो रहा है। सरकार को अर्थ-व्यवस्था के कई क्षेत्रों में ऐसी प्रवृत्ति विवाई देती है कि वे कर सम्बन्धी रियायतों को अपनी घटटी हुई दीनांक को बढ़ाने का एकमात्र तरीका भानते हैं। यह समझ लेना चाहिए कि अगर विकास के लिए आवश्यक साधनों को, मुद्रास्फीति (इन्फोरेशन) के बिना, जुटाना है तो उन लोगों को करों का अधिक बोझ उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए जिनमें इस बोझ को उठाने की सामर्थ्य है।

9. साधन जुटाने के एक पूर्ण साध्यम से भी प्रत्याशित सफलता नहीं मिली है। सरकारी क्षेत्र के उपकरणों का अधिशेष (सरलस) 1977-78 में अनुमान से काफी कम रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि चालू वर्ष में भी उनके अधिशेष की मात्रा बहुत ज्यादा नहीं होगी। इस बात को व्यान में रखते हुए कि इन उद्यमों में कुल 12,800 करोड़ रुपए की पूँजी लगाई गई है, यह स्थिति बास्तव में निराशाजनक है।

10. यदि बढ़ते हुए पूँजी निवेश के लिए वित्त की व्यवस्था अस्फीति-कारी (नॉर्म इन्फोरेशनरी) तारीके से करनी है तो अर्थ-व्यवस्था में और अधिक बचतें करनी होगी। इस कार्य में सफलता अन्य बातों के साथ-साथ, अपव्यय को, जाहे वह सरकारी क्षेत्र में हो या निजी क्षेत्र में, कम करके प्राप्त की जा सकती है। विकास-भिन्न व्यय को, और खास तौर से ऐसी आधिक महायता (समिती) के व्यय को सीमित करके, जो कोई खास सामाजिक या प्रार्थिक प्रयोजन सिद्ध नहीं करती, सरकारी व्यय में कियायत की जा सकती है। विनास व्यय पर निष्ठुरतापूर्वक अंकुश लगाकर हमारे प्रार्थिक जीवन के कठोर तर्जों और हमारे परम्परागत जीवन मूल्यों के अनुरूप अधिक साक्षीपूर्ण जीवन जैसी प्रपनाकर निजी बचतों को बढ़ाया जाना चाहिए।

11. नियर्ति में 1977-78 से पहले के तीन वर्षों में गतिशील वृद्धि हुई थी लेकिन उसमें चालू वर्ष के पहले घाठ महीनों में वस्तुतः कमी हुई है। यह चिन्माजनक प्रवृत्ति कई कारणों से भाई है जैसे, आयात-कर्ता देशों में हमारी अधिक गतिशील मर्दों पर लगाए गए प्रतिबन्ध, विकसित देशों में मन्दी भी प्रवृत्तियां और कुछ नियर्ति योग्य वस्तुओं की अनातरित मांग में वृद्धि। यह बहुत ज़रूरी है कि हम एक मत्रिय नियर्ति संबद्ध नीति का पालन करके कुल नियर्ति में जो गिरावट की प्रवृत्ति है उसे उलट दें।

12. विनियमित वस्तुओं के नियर्ति को बढ़ावा देने की आधिकृत संपत्ति बल देने के साथ-साथ, हमें इस बात को भी नज़रअन्दाज़ नहीं करना चाहिए कि एक बड़ा कृषि-प्रधान देश होने के नाते उत्पादों (प्रोडक्ट) के नियर्ति को बढ़ाने के लिए भी एक सक्रिय नीति अपनाने की आवश्यकता है। एक ऐसी नीति का तत्त्वज्ञान में पालन करने की ज़रूरत है जिससे फल, मिठाया, मुछ किसीकों के बनस्पति तेल, नेलजन्य पदार्थ और गरम मसाले जैसी वस्तुओं की आवश्यकता से अधिक मात्रा को नियर्ति के लिए बढ़ावा जाए और क्षेत्रों में अतिरिक्त रोजगार भी पैदा होगा।

13. आयात के बढ़ते हुए स्तर से पता चलता है कि विकास के लिए प्रारंभिक निधि (रिजर्व) के उपयोग को प्रक्रिया शुरू हो गई है। आब तेल जैसी उपभोक्ता वस्तु के आयात के अलावा, इस्पात, सीमेन्ट, उर्वरक और अन्य धारु जैसी विकासात्मक वस्तुओं का आयात भी काफी ज्यादा बढ़ गया है। आयात नीति को उदार बना दिया गया है और जहां कहीं आवश्यक था आयात युक्तों को कम कर दिया गया था एकदम हटा दिया गया है ताकि पूँजीगत वस्तुओं, फालू, पुँजी, संचाटकों (कॉम्पोनेट) और कम्जी कामग्री का आयात करने में सुविधा हो और हम प्रकार उत्पादन और निवेश में आगे बाली कठिनाइयों को दूर किया जा सके।

14. देश के विवेणी मुद्रा के प्रारंभित भण्डार में वृद्धि की दर चालू वर्ष के दौरान भीमी पड़ गई है। ऐसा अंगत नियर्ति और आयात की प्रवृत्तियों के कारण और अद्वय प्राप्तियों की वृद्धि की दर कम हो जाने के कारण हुआ है। यदि हम विभिन्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं पर दृष्टिभान करें तो हमें मालूम होगा कि हम इसमें लगातार वृद्धि की आशा नहीं कर सकते। हस्तिए, यद्यपि हम समय तो हमारे विवेणी मुद्रा के भण्डार का स्तर ऊंचा है किंतु भी हमसे से सम्बन्धित वर्च करने की ज़रूरत है।

1978-79 के संशोधित अनुमान

15. में 1978-79 के संशोधित अनुमानों पर आता है।

16. जहां तक व्यय का सम्बन्ध है, बजट के बाद ऐसी कई घटनाएं घटी जिनके कारण चालू वर्ष में केन्द्र पर अतिरिक्त बोझ आ पड़ा।

17. जैसा कि सम्मानित सदस्य जानते हैं, हाल के वर्षों में लगातार कई राज्य सरकारें रिजर्व बैंक से अपनी उधार लेने की हड़कारी से ज्यादा रकमें निकालती रही हैं। इस उद्देश्य तो कि राज्य साफ ट्रिसाव के साथ शुद्धित करें और विषय में भी शोवरड्राफ्ट न लें, हमने राज्यों को 1977-78 के अन्त तक के शोवरड्राफ्ट बुकता करने के लिए विषेष अप्लाई का निष्पत्ति किया था। इस सम्बन्ध में की गई अवायनियों की राशि 555 करोड़ रुपए की है। दैवी विपत्तियों से पीड़ित लोगों को अनुग्रहपूर्ण राहत देने के लिए राज्यों को दी जाने वाली सहायता की 10 करोड़ रुपए की मूल राशि को बढ़ाकर 40 करोड़ रुपए करना पड़ा।

18. किसीको उनकी उपज पर ज्यादा आमदनी देने के लिए चालू वर्ष के दौरान आवल, गेहूं और मोटे अन्याओं की चूली कीमत (प्रोडक्टोरमेन्ट प्राप्त) को बढ़ावा दिया जिसके कारण लगभग 42 करोड़ रुपए की अतिरिक्त व्यय हुआ। भारतीय आब निगम को अदा की गई कुछ बकाया रकमों और दिसंबर, 1978 से गेहूं की निर्यात कीमत (शू प्राइस) में वृद्धि करने से कुछ अधिक प्राप्तियों को ट्रिसाव में लेने के बाद, चालू वर्ष के दौरान आब सम्बन्धी अधिक सहायता के अन्तर्गत बजट अनुमानों की 450 करोड़ रुपए की राशि के अन्वादा 114 करोड़ रुपए का अतिरिक्त व्यय होगा।

19. नियर्ति सहायता के व्यय में, 251 करोड़ रुपए की बजट व्यवस्था के अन्वादा, 130 करोड़ रुपए की वृद्धि होगी जिसका अधिक कारण यह

है कि विषयों वर्ष के बचे हए दावों की काफी अधिक रकम इस वर्ष छुकानी पड़ी। 1978 में 6.5 लाख भेटिक टन धीनी के नियांत पर होने वाली हानि, 10 करोड़ रुपए की मूल व्यवस्था से 23 करोड़ रुपए ज्यादा होगी।

20. आयोजनाभित्र सहायता के रूप में ऐसे बहुन से सरकारी क्षेत्र के एकों को बजट में प्रत्याशित राशि में अधिक सहायता देनी पड़ी जिन्हें उत्पादन में हुई हानियों के कारण वित्तीय कठिनाइयों महसूस हुई। कोन हृषिक्षा को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ और उसे, 90 करोड़ रुपए की व्यवस्था के मुकाबले में, 173 करोड़ रुपए की महायता की आवश्यकता होगी। उर्वरक निगम और राष्ट्रीय बदल निगम ऐसे कुछ और उपकरणों को भी काफी माझा में अतिरिक्त सहायता की ज़रूरत है। इसके परिणाम-स्वरूप सरकारी उपकरणों को दिए जाने वाले आयोजना-भित्र अर्हों की राशि 250 करोड़ रुपए की बजट व्यवस्था से केवल 150 करोड़ रुपए अधिक हो जाएगी।

21. चूंकि अस्त बचतों से प्रत्याशित से अधिक राशि प्राप्त हुई है इसलिए इस संग्रह में से राज्य सरकारों को उनके हिस्से के रूप में दिए जाने वाले अर्हों की राशि 300 करोड़ रुपए की बजट व्यवस्था से 165 करोड़ रुपए ज्यादा होगी, इस में से कुछ वृद्धि पिछले वर्ष के आखिरी विनों में संग्रह की राशि में तेजी से बढ़ोतरी होने के कारण हुई।

22. अनुमान है कि चालू वर्ष में रक्षा व्यय, 2945 करोड़ रुपए की बजट व्यवस्था के मुकाबले में, 2845 करोड़ रुपए का होगा।

23. केन्द्रीय आयोजना व्यय की स्थिति एक-जैसी नहीं रही है और कुल मिलाकर केन्द्रीय आयोजना व्यय के लिए नियांत्रित 4520 करोड़ रुपए की व्यवस्था में से 201 करोड़ रुपए कम वर्ष होने का अनुमान है। मुख्य रूप से पेट्रोलियम, उर्वरक और दूर-संचार परियोजनाओं में अनुमानतः अधिक कमी होगी। तेल और प्राकृतिक गैस आयोग को अपने भ्रष्ट-टक्कर कार्यक्रम (ऑफ शोर प्रोग्राम) के कारण, 63 करोड़ रुपए की कम ज़रूरत होगी। पेट्रोलियम धोत के परिवर्य में कमी होने के कारण तेल उद्योग विकास बोर्ड की भी 58 करोड़ रुपए की कम ज़रूरत होगी। उर्वरक परियोजनाओं के लिए भी 236 करोड़ रुपए की मूल व्यवस्था की तुलना में, 36 करोड़ रुपए की कम ज़रूरत होगी; यह कमी खास तौर से ट्रांस्फर V और कोरोन चरण II के एकों और महाराष्ट्र में स्थापित किए जाने वाले नेप पर आधारित नए उर्वरक संयंत्र के सम्बन्ध में हुई है। अनुमान है कि दूर-संचार परियोजनाओं का परिवर्य, जिसकी वित्र व्यवस्था अधिकतर आनंदिक साधनों से की जाती है, मुख्यरूप से उपस्कर (इकिवप्मेंट) और सामान की प्राप्ति में हुई देशी के कारण, 46 करोड़ रुपए कम होगा।

24. कृषि की योजनाओं में 25 करोड़ रुपए कम वर्ष होने का अनुमान है। राज्य सरकारों द्वारा कार्यान्वयन में या बोरेवार योजनाएं सैयार करने में देशी किए जाने के कारण और आवश्यक आधारभूत सुविधाओं की अपर्याप्तिना की वजह से, कुछ कृषि योजनाओं के कार्य में आवश्यक तेजी नहीं आ सकी है। इन मस्त्याओं को मुत्तकाया जा रहा है। किन्तु कुछ योजनाओं में प्रभावी प्रगति हुई है। मन्मानित सदस्यों को यह जानकर खुशी होनी कि 'काम के बच्चे आनंद' कार्यक्रम ग्रामीण विकास और रोजगार सबर्दन का एक बड़ा साधन बन रहा है और इस योजना के लिए जो 30 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई थी उसे बढ़ा कर 100 करोड़ रुपए कर दिया गया है और आया है कि इससे वर्ष में 40 करोड़ श्रम-विनों का काम पैदा होगा। देशी विकास कार्यक्रम को जिससे देहान्ती इलाकों में लाभपूर्ण रोजगार भी मिलेगा और आय में बढ़ोतरी भी होगी, 11 करोड़ रुपए की बजट व्यवस्था से 19 करोड़ रुपए ज्यादा हो जायेगे।

25. चालू बजट में राज्यों और संघ राज्य धेनों की आयोजनाओं की सहायता देने के लिए 2761 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई थी। जैसा कि सम्मानित सदस्यों की मालूम है, इस साल जो राज्य धेनों से पीड़ित हुए थे, उनके साधनों में भी गंभीर रूप से कमी हो गई और वे केन्द्र से अतिरिक्त सहायता प्राप्त किए बिना अपनी अनुमोदित आयोजनाओं के परिवर्य की वित्र व्यवस्था करने की स्थिति में नहीं थे। इसलिए उन राज्यों को 325 करोड़ रुपए की प्रतिरिक्त आयोजना-सहायता देना जल्दी हो गया था। ग्रामीण विशुद्धीकरण मिशन को भी उसकी राज्य-क्षेत्र की अनुमोदित आयोजनागत योजनाओं की वित्र-व्यवस्था करने के लिए बजट से 39 करोड़ रुपए ज्यादा देने पड़े। संघोंधित अनुमानों के अनुमान चालू वर्ष में राज्यों और संघ राज्यक्षेत्रों के लिए केन्द्रीय सहायता राशि 3112 करोड़ रुपए बढ़ती है।

26. जहां तक चालू वर्ष में प्राप्तियों का संबंध है, अल्प बचतों के संग्रह से, 460 करोड़ रुपए के बजट अनुमानों की अपेक्षा, 140 करोड़ रुपए अधिक प्राप्त होंगे; इसका भ्रेत्र केन्द्र और राज्यों की संबंध एजेंसियों को जाता है जिन्होंने इस दिवान में सतत प्रयत्न किए हैं। अनुमान है कि गैर-सरकारी भविष्य निधियों की जमा-राशियों में भी, 225 करोड़ रुपए के बजट अनुमानों से 75 करोड़ रुपए की अधिक वृद्धि होगी। सोने भी बित्री से, जिसे बजट बनाते समय हिसाब में नहीं लिया गया था, 86 करोड़ रुपए की प्राप्ति हुई है। द्वितीय व्यापार करने वाले देशों को पहले के वर्षों में जो अल्पकालीन छूट दिए गए थे उनकी बस्तियों में भी उन देशों से अधिक आयात होने के कारण, 75 करोड़ रुपए की वृद्धि होगी।

27. इस वर्ष देश के पूर्वी भाग में जाने से ग्रामीणिक उत्पादन अस्तव्यस्त हो जाने के कारण और सरकारी क्षेत्र के कुछ बड़े उपकरणों के साथ के मार्जिन में कमी हो जाने की वजह से निगम और आय करने की प्राप्तियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। ये प्राप्तियां, 2577 करोड़ रुपए के बजट अनुमानों से, लगभग 102 करोड़ रुपए कम होने का अनुमान है। संघ उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क से कुल मिला कर 145 करोड़ रुपए अधिक प्राप्त होंगे। आयात नीति को उदार बना देने और देश की आवश्यकताओं की पूरा करने के लिए अधिक आयात करने के कालव्यस्वरूप, आशा है कि सीमाशुल्कों में, 1860 करोड़ रुपए के बजट अनुमानों से, 250 करोड़ रुपए की अधिक प्राप्ति होगी लेकिन, दूसरी ओर, संघ उत्पादशुल्कों के रूप में, 5299 करोड़ रुपए के बजट अनुमानों से, 103 करोड़ रुपए कम प्राप्त होंगे। इस कमी का कारण, अन्य भारतीयों के साथ साथ, यह भी रहा है कि खांडसारी पर से शुल्क हटा दिए जाने के कारण और जीनी का कंट्रोल समाप्त कर देने के बाद उसकी कीमतों में गिरावट आ जाने की वजह से जीनी पर कम शुल्क प्राप्त हुआ है। मिट्टी के तेल (फिरोजीन), मार्सिन-निमित रेशे, एल्युमिनियम और ताम्बे से भी कम उत्पाद-शुल्क राजस्व प्राप्त हुआ है किन्तु इन वस्तुओं पर अपेक्षाकृत अधिक आयात-शुल्क प्राप्त हो जाने से इस कमी की अधिकृत हो गई है।

28. विवेशी सहायता का उपयोग भी कम हुआ है; इसका एक कारण यह है कि बुद्धान्तीय साधारण देने वाली एजेंसियों ने कार्यशक्ति की बजाय परियोजना के लिए सहायता देना शुरू कर दिया है और दूरमा कारण यह है कि कुछ देशों से द्वितीय व्यापार का अधिक बड़ा भाग विशिष्ट परियोजनाओं के लिए दिया जाने लागा है। योनों स्थितियों में, संबद्ध परियोजनाएं जीनी बन रही हैं और इसलिए सकल सहायता प्राप्तियां बजट अनुमानों की अपेक्षा 447 करोड़ रुपए कम होगी। तथापि, भागतों की गति को तेज़ करने के लिए करम उठाए जा रहे हैं।

29. प्राप्तियों और अधिक व्यय में हुए अन्य परिवर्तनों को हिसाब में लेने पर अनुमान है कि चालू वर्ष में कुल मिलाकर 1590 करोड़ रुपए का आटा रहेगा। जबकि मूल अनुमान 1071 करोड़ रुपए का था। इसमें 555 करोड़ रुपए की वह अतिरिक्त राशि शामिल नहीं की गई है जिसका आटा, कुछ राज्यों

की उनके पिछो साट को पूरा करने के लिए गए अण्डों के रूप में, केन्द्र पर डाला गया था और जो आता-समयोजन (बुक एडजस्टमेंट) के क्षेत्र में दूरते के कारण, चालू वर्ष में कोई आधिक प्रभाव नहीं ढालेगा।

1979-80 के लिये बजट अनुमान

30. अब ये 1979-80 के लिए व्यय के अनुमान पेश करूँगा।

31. इस बजट में सातवें वित्त आयोग की उन तिफारियों का प्रभाव प्रतिविम्स्त होता है जो सरकार द्वारा स्वीकार कर ली गई है। हालांकि हमारी संघीय भासन व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए आयोग के पंचाट (एकांड) के अनुसार राज्यों को अधिक साधन प्रदान करना अत्यन्त बाधीय है तथापि इससे भल्य अवधि में केन्द्र के लिए गम्भीर वित्तीय समस्याएं उत्पन्न हो जाएंगी। इस बजट में इन समस्याओं से निपटने का प्रयास किया गया है।

32. केन्द्र, राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों की 1979-80 की आधिक आयोजना, 1978-79 के 11649 करोड़ रुपए के कुल अनुमोदित परिव्यय की तुलना में, 12511 करोड़ रुपए की होगी। यह राशि 7.4 प्रतिशत बढ़ि की दौतक है। किन्तु, इस राशि का निर्धारण करने समय सम्मानित संसद्य इस बात को ध्यान में रखेंगे कि केन्द्रीय और राज्यों की आयोजनाओं में 835 करोड़ रुपए की अनुमानित राशि वर्षनबद्ध व्यय के रूप में आयोजना-व्यय से आयोजना-व्यय में अन्तरित कर दी गई है। इस अन्तरण को द्विसाख में लेने से, 1979-80 के विकास व्यय में उल्लेख-नीय बढ़ि हो जाएगी।

33. 1979-80 के बजट में केन्द्रीय आयोजना के लिए और राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों की आयोजनाओं को सहायता देने के लिए 7108 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है। राज्यों की आयोजनाओं, संघ राज्य क्षेत्रों की आयोजनाओं और पहाड़ी तथा जन-जातीय क्षेत्रों की उप-आयोजनाओं, उत्तर-पूर्व परिवद और ग्रामीण विश्वातीकरण नियम की योजनाओं के परिव्यय के लिए केन्द्रीय सहायता देने के उद्देश्य से 2300 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है। राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों उत्तर-पूर्व परिवद ग्राहि की आयोजनाएं, उनके अपने साधनों समेत, 1979-80 में कुल मिला कर 6099 करोड़ रुपए की होंगी जबकि 1978-79 में इनके परिव्यय के लिए 5985 करोड़ रुपए रखे गए थे।

34. केन्द्रीय आयोजना के लिए बजट में 4808 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है। इस प्रकार सरकारी धेन के उपकरणों के 1604 करोड़ रुपए के आन्तरिक और अन्य साधनों को मिला कर, 1979-80 की केन्द्रीय आयोजना 6412 करोड़ रुपए की होंगी जबकि वह -1978-79 में 5664 करोड़ रुपए की थी।

35. 1979-80 की केन्द्रीय आयोजना और राज्यों की आयोजनाओं के लिए परिव्ययों का निर्धारण कर दिए जाने के बाद, राष्ट्रीय विकास परिवद की हाल की वेळे में, केन्द्र-प्रायोजित योजनाओं के सम्बन्ध में कुछ केन्द्र-व्यवस्था करने का निर्णय लिया गया है। कुछ केन्द्र-प्रायोजित योजनाओं के लिए और धन-राशियों अब आवश्यित की गई है वे एक नए कार्यों के आधार पर राज्यों में वितरण के लिए दी जाएंगी। इन योजनाओं के लिए 1979-80 की बजट व्यवस्थाओं में वर्ष के दौरान सदनुसार समायोजन किए जाएंगे।

36. जैसा कि मम्मानित सदस्य जानते हैं, हमारी नई विकास नीति का बुनियादी उद्देश्य गरीबी और बेरोजगारी को मिटाना है। इसके लिए हमारी आयोजनाओं में प्राथमिकताओं के क्रम में आमूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है। इसलिए हमारी आयोजनाओं में कृषि और ग्रामीण विकास को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। लेकिन सरकार यह मानती है कि अधेशित सीमा तक, विकास आयोजनाओं को नई विद्या काफी समीक्षा प्रवधि में ही

ही जा सकती है। तथापि हम उन कार्यक्रमों की गति और प्रभाव को तेजी से बढ़ाना चाहते हैं, जिनका, हृषि का विकास करने और रोजगार बढ़ाने से बनिष्ठ सम्बन्ध है।

37. हृषि और ग्रामीण विकास के आयोजना परिव्यय को, जो 1978-79 में 1754 करोड़ रुपए का था, बढ़ाकर 1979-80 में 1811 करोड़ रुपए कर दिया गया है। 2000 ऐसे अण्डों (झलौक) में जहां विशेष कार्यक्रमों में से कोई एक कार्यक्रम चल रहा हो और 300 अन्य खंडों में जहां अब तक ऐसा कोई विशेष कार्यक्रम नहीं चल रहा हो, एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम में तेजी सारे के लिए 258 करोड़ रुपए के परिव्यय की व्यवस्था की गई है। जोर इसी बात पर विद्या जाएगा कि छोटे और सीमान्तिक किसानों, बैतिहार मजदूरों, ग्रामीण कारीगरों और अनुदूषित जातियों और अनुदूषित जन-जातियों की प्रार्थिक दशा में सुधार किया जाए। 'काम के बदल आनाज' कार्यक्रम के लिए 50 करोड़ रुपए की व्यवस्था की जा रही है। चालू वर्ष के दौरान अनुमान विद्युत उपलब्ध तक इस राशि को बहुत ज्यादा बढ़ाना होगा। लेकिन इस बुद्धि से कोई मुद्रासंकीर्तिकारी प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि हम इसके लिए अपने संचित आवास भंडारों का ही सहारा लेंगे।

38. सरकार को इस सदन में इस बात पर जोर देने की ज़रूरत नहीं होगी कि हृषि विकास के लिए सिचाई का बहुत महत्व है। बाकी नियन्त्रण अहित बड़ी, सध्यम और छोटी सिचाई परिवोजनाओं के परिव्यय के लिए 1979-80 में 1488 करोड़ रुपये की व्यवस्था की जा रही है जबकि 1978-79 में 1401 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई थी। इसमें से अधिकांश परिव्यय राज्य सरकारों के बजटों में ग्रामिल किया जाएगा। 1979-80 में 32 लाख हेक्टेयर की अतिरिक्त सिचाई की अमता बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है जबकि 1978-79 में 28 लाख हेक्टेयर का लक्ष्य रखा गया था। छोटी फिल्हाई के विकास की गति को तेज करने तिर्यक छोटी सिचाई पर वो जाने वाली आधिक सहायता की जो इस समय के बाट छोटे और सीमान्तिक किसानों के लिए ही उपलब्ध है, उन किसानों को भी लेकिन बढ़ी दर पर, उपलब्ध कराने के लिए एक योजना बनाई जा रही है जिनके पास 2 से 4 हेक्टेयर के बीच जमीन है। इस उद्देश्य से 10 करोड़ रुपये की व्यवस्था की जा रही है। छोटी सिचाई के कार्यक्रम के लिए निर्धारित आयोजनागत व्यवस्था की अनुपूर्ति करने के लिए कृषि पुनर्वित और विकास नियम के साधन उपलब्ध कराए जाएंगे। केन्द्रीय बजट से हृषि पुनर्वित और विकास नियम को उपलब्ध की जाने वाली वित्ती सहायता की, जो 1978-79 में 133 करोड़ रुपए की थी, बढ़ाकर 1979-80 में बढ़ाकर 159 करोड़ रुपए कर दिया गया है।

39. हम ग्रामीण विकास और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार प्रबन्धन कार्यक्रमों का जो अत्यन्त महत्व वे रहे हैं, उसी के सन्दर्भ में यह सुनिश्चित करना ज़रूरी है कि आगे वाले वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों की और संस्थानात वित्त का प्रवाह मुख्यतः तथा नियमित रूप से और व्याज की उचित दरों पर हो। पहले उठाए गए कादम्बों के अलावा सरकार ने हृषि के लिए आवश्यिक अण्डों के सम्बन्ध में पुनर्वित को व्यवस्था करने की प्रमुख एजेंसी है, आय कर से मुक्त कर देने का फैसला किया है। हम जो दूसरे उपाय सोच रहे हैं उनके साथ मिलकर इस रियायत से हृषि पुनर्वित और विकास नियम ड्याज की उम दर को लगाना एक प्रतिशत कम कर सकेगा जिस पर वह छोटी सिचाई और भूमि विकास के लिए अण्डों की पुनर्वित व्यवस्था करता है; रियाय वर्षों की यह सुनिश्चित करने के लिए तदनुरूप कदम उठाएगा कि व्याज की दर में लगाना एक प्रतिशत की कमी किए जाने का सम्पूर्ण लाभ बाणिजित हैं कि द्वारा प्रतिशत अल्पकर्ता (प्रलटीमेट बरोबर) तक पहुंचा दिया जाए। इसके कलस्वरूप, किसानों को छोटी सिचाई और भूमि विकास में पूजी लगाना सक्ता पड़ेगा और इसलिए अधिक ग्रामीण दिव्याई देगा।

40. मम्मानित सदस्य इस बात से अवगत हैं इस वर्ष शुरू कि ग्रामीण विकास के कार्यक्रम के एक प्रमाण के रूप में ग्रामपरेशन पलड़ी नामक एक राष्ट्रीय डेरी विकास कार्यक्रम को अनुमोदित किया गया था जिसका उद्देश्य जाता

के प्रोवेण स्तर को ऊंचा उठाना, रौजगार पैदा करना और एक सक्षम सहायक धनधर्म के जरिये से ग्रामीण क्षेत्रों में व्याय को बढ़ाना है। इस कार्यक्रम के लिए 1979-80 की केन्द्रीय आयोजना में 32 करोड़ रुपए के परिव्यय की व्यवस्था की गई है। इस कार्यक्रम के पूरा ही जाने पर इस से एक करोड़ किसान परिवारों को लाभपूर्ण रौजगार मिलेगा। अब इमारी जनसा को अधिक हृदय की उपलब्धि सुनिश्चित हो जाएगी।

41. गांवों में बिजली लगाने का कार्यक्रम हमारे हृषि और ग्रामीण विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। ग्राम विद्युतीकरण कार्यक्रम के लिए 1979-80 में 285 करोड़ रुपए के कुल परिव्यय की व्यवस्था की जाएगी। इसके अन्तावा 50 करोड़ रुपए की अन्तिरिक्त राशि इस नयोजन के लिए विद्युतिकरण बैंकों, कृषि पुनर्वित और विकास निगम तथा ग्रामीण विद्युतीकरण निगम के ग्राम्यम से जुटाई जाएगी। 1978-79 में इसके तुलनीय ग्रामकर्ज क्रमण: 277 करोड़ रुपए और 20 करोड़ रुपए के हैं। अनुमान है कि 1978-79 में 22000 गांवों में बिजली लग जाएगी, और इसकी तुलना में 1979-80 में 25000 गांवों का लक्ष्य रखा गया है।

42. खेती की पैदावार वड़ जाने से यह स्पष्ट है कि उरका भंडारण क्षमता (स्टोरेज) को बढ़ाने की भी जरूरत होनी जिससे की अनाज की कम से कम बरबादी हो। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण सहायता देकर भंडारण की सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए एक योजना हैं यार की जा रही है। इससे बाहरा लाभ होगा अनाज उत्पादन के स्थानों के पारही गोदामों में रखा जा सकेगा जिससे बरबादी कम होगी; और सरकार को भी भंडारण का कम खर्च उठाना पड़ेगा क्योंकि गोदाम भी स्थानों में बन सकेंगे और अनाज के भंडार को रखने का खर्च भी किसान ही उठायेंगे।

43. यह सरकार ग्रामीण जलपूर्ति के कार्यक्रमों को शीघ्र पूरा करने के लिए बच्चबद्ध है जिससे की सभी समस्याएँ गांवों में निरापद प्रौद्योगिक विवर-सनीय पीने का पानी उपलब्ध हो सके। 1979-80 की केन्द्रीय आयोजना में इस कार्यक्रम के लिए 80 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है जबकि 1978-79 में इसके लिए 60 करोड़ रुपए निर्धारित किए गए थे। मार्च 1977 में इस सरकार के सत्ता में आने के बाव से 1978-79 में 18,000 गांवों में पीने के पानी की व्यवस्था की गई थी। 1978-79 के लिए 27,000 गांवों का लक्ष्य रखा गया है। मैं सदन को यह विवरास विलाना चाहूँगा कि अगर इन कार्यक्रमों में और ज्यादा तर्ज से प्रगति हुई तो सरकार इस प्रयोजन के लिए और धन राशि देने में नहीं हिचकिचाएँगा।

44. अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जमजातीय वा अधिक शोषण और उनके प्रति सामाजिक अंदावार तक खट्टम नहीं होगा जब तक कि उनके विकास के कार्यक्रम ठोस आर्थिक आधार पर नहीं बसाए जाते। इसलिए केन्द्रीय मंत्रालयों और राज्य सरकारों से कहा गया है कि वे अपनी 1979-80 की वार्षिक आयोजना में उनके लिए एक विशेष हिस्सा रखें ताकि वे विभिन्न क्षेत्रों के कार्यक्रमों से पर्याप्त लाभ प्राप्त कर सकें। अनुसूचित जातियों और आन्य पिछड़े गयों के कल्याण सम्बन्धी कार्यक्रमों पर 1979-80 में 117 करोड़ रुपए का परिव्यय होगा।

45. 1979-80 की जनजातीय उप-आयोजना के लिए 70 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है। इससे विभिन्न विकासशीर्षों के अधिकार्य संघरण राज्य सरकारों से प्राप्त होने वाली धनराशियों की अनुदूषि के बारे में। जनजातीय क्षेत्रों की कठिन परिव्यवस्थियों में काम करने वाले राज्य सरकार के कर्मचारियों को प्रोत्साहन देने के लिए सातवें वित्त आयोग की सिफारिश के अनुसार राज्यों को अनुदान भी दिए जाएंगे।

46. ग्राम-उद्योगों का विकास केन्द्रीय आयोजना का एक महत्वपूर्ण भाग है। केन्द्रीय क्षेत्र में 1979-80 के लिए 193 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है जबकि चालू वर्ष में इसके लिए मूलत 140 करोड़ रुपए रखे गए थे। राज्यों की आयोजनाओं में समूचित व्यवस्था वर्ष के अंत में 150 लाखों पर मंस्थागत साधन उपलब्ध करा कर इस परिव्यय की अनुपूर्ति की जाएगी।

47. हृषकरथा उद्योग (हैंडपूर्म) हमारा अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राम-उद्योग है। देश में लगभग 40 लाख हृषकरथे हैं जिनसे लगभग एक करोड़ लोगों को रोजगार मिल रहा है। उन्होंने 1978-79 में 250 करोड़ मीटर कपड़ा बनाया, और 1979-80 के लिए 2750 करोड़ मीटर का लक्ष्य रखा गया है। बुनकरों को सहकारी समितियों के रूप में मंगित करने के लिए इस धरा की मर्वीच्च महाराष्ट्री संस्थाओं को बहसर विषयता की सुविधा प्रदान करने के लिए और नियांत के प्रयोजन से गहन विकास को बढ़ावा देने के लिए 1979-80 में 28 करोड़ रुपए की व्यवस्था की जा रही है।

48. ग्रामीण क्षेत्रों में डाक सेवाएं बढ़ाने की सरकार की नीति के प्रनुस्ख 1979-80 में 5000 नए डाकघर खोलने और चलते-फिरते डाकघरों के जरिये 10000 डाक पटलों (पोस्टल काउंटर) की व्यवस्था करने का प्रस्ताव है। 1979-80 में दूरसंचार पर 359 करोड़ रुपए का परिव्यय दोगा और उसमें ग्रामीण क्षेत्रों में इन सुविधाओं के विस्तार पर पहले से ज्यादा जोर दिया जाएगा।

49. आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए पर्याप्त व्यवस्था करने पर भी ध्यान दिया गया है जिस पर रुपि और उद्योगों की प्रगति समान रूप से निर्भार करेगी। इस प्रकार बिजली, कोयला, उर्वरक और रसायन, घनिज, पेट्रोलियम, इस्पात और सड़कों तथा रेलों के लिए व्यवस्था को जो 1978-79 की केन्द्रीय आयोजना में 2733 करोड़ रुपए की थी, बढ़ाकर 1979-80 में 3122 करोड़ रुपए कर दिया जाएगा।

50. रुपि तथा उद्योग के विकास के लिए विजली के उत्पादन को बढ़ाना भी बहुत ज़रूरी है। बिजली के क्षेत्र के लिए 1978-79 में 2217 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई थी जो पहले की तुलना में काफी ज्यादा थी। 1979-80 में विकास की गति को और भी तेज़ किया जाएगा और उसके लिए 2446 करोड़ रुपए के परिव्यय की व्यवस्था की जा रही है। बिजली के लिए आयोजनागत व्यवस्था का अधिकांश भाग राज्यों की आयोजनाओं में रखा जाएगा परन्तु केवल क्षेत्रों में बिजली की परियोजनाओं के लिए 382 करोड़ रुपए की राशि रखी गई है। 1979-80 में फरसका में सुपर-धमल स्टेनेशन के रूप में एक बड़ी शुरुआत की जाएगी। उम्मीद है कि 1979-80 में 3000 मेगावाट बिजली के उत्पादन की अतिरिक्त क्षमता दीवा हो जाएगी, जब कि चालू वर्ष में 2500 मेगावाट की अतिरिक्त क्षमता के लिए व्यवस्था की गई थी। बिजली की वितरण की सुविधाओं में भी सुधार किया जा रहा है।

51. उर्वरकों के उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना सरकार की नीति का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। उर्वरक संघों में निवास के लिए 1979-80 की आयोजना में 254 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है। इससे बहुत सी पहले से चल रही परियोजनाओं के अर्जों को पूरा किया जाएगा। जिससे सरकारी क्षेत्र में उर्वरकों के उत्पादन को जो इस वर्ष 12 लाख मेट्रिक टन था, बढ़ाकर 1979-80 में 20 लाख मेट्रिक टन कर दिया जाएगा। पश्चिमी घाट पर गैस पर आधारित दो अपतटीय संघों (ओफ शॉर प्लॉट्स) को और भस्म में एक और गैस पर आधारित संघ की शुरू कर दिया जाएगा।

52. धर्थ-व्यवस्था में कार्यक्रमाप बढ़ जाने से और अधिक पूँजी या निवेश किए जाने से चालू वर्ष के दौरान इस्पात की मांग में लगभग 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। लोटे इस्पात के संघों के उत्पादन में वृद्धि हो जाने से इस्पात की उम्मीदी की गयी अन्यथा हुई होनी, टाल दिया गया है। इस्पात क्षेत्र के लिए 1979-80 में की जा रही 600 करोड़ रुपए की व्यवस्था की जा रही है। इस पर अब दो दोहरी गांग के मन्दर्भ में विकास करना होगा। इस व्यवस्था से बोकारो और भिलाई के संघों का विस्तार किया जा सकेगा और मेलम में नए संघों का काम आये बढ़ाया जा सकेगा।

53. कोयला भी बिजली की तरह हमारे विकास की एक वृत्तियाई आवश्यकता है और इसके उत्पादन को बढ़ावा बहुत जरूरी है। प्रनुमान है कि चालू वर्ष में कोयले का उत्पादन 10.2 करोड़ मेट्रिक टन से उदाहरण नहीं होगा अर्थात् इसके उत्पादन पर गम्भीर बढ़ों का प्रतिक्रिय प्रभाव पड़ा है। कोयला खेत की व्यवस्था को जो चालू वर्ष में 267 करोड़ रुपए की थी बढ़ाकार 1979-80 में 346 करोड़ रुपए किया जा रहा है।

54. तेल भी ऊर्जा (एनजी) का उतना ही महत्वपूर्ण स्रोत है और सरकार तेल खेतों का पता लगाने और उनका विकास करने के काम को बहुत महत्व दे रही है ताकि आधातित सेल पर हमारी निर्धारित कम से कम हो जाए। बंबई हाई को विकास का काम अगले साल बहुत हवा तक पूरा हो जाएगा। कोयली के तेल-शोधक कारखाने (रिफाइनरी) की अमंत्र में 30 लाख मेट्रिक टन का विस्तार कर दिए जाने से देश की तेल-शोधन क्षमता प्रति वर्ष 3 करोड़ मेट्रिक टन तक पहुंच गई है। इस खेत के लिए 1979-80 में 622 करोड़ रुपए की व्यवस्था की जा रही है।

55. सड़कें भी राष्ट्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं और राष्ट्रीय राजपथों, सामरिक महत्व की सड़कों, उत्तर में दीमावर्सी खेतों की सड़कों और प्रन्तरगार्जीय आर्थिक महत्व की सड़कों के लिए 1979-80 में 120 करोड़ रुपए की व्यवस्था करने का प्रस्ताव है। राज्यों के राजपथों और जिला नाम ग्रामीण सड़कों के लिए राज्यों की आयोजनाओं में रखी गई धनराशियों से इस व्यवस्था की अनुपूर्ति की जाएगी।

56. हमारे देश में शहरीकरण की प्रक्रिया से गंदी और अनाधिकृत बस्तियां बढ़ गई हैं। इन बस्तियों के निवासियों के लिए जलपूर्ति, सामुदायिक शोचालय और स्नानागार, चौपी और पक्की गलियाँ तथा गलियों में रोपानी की व्यवस्था जैसी अस्थावश्यक सुविधाओं की जारी कमी है। इसलिए सरकार ने गंदी बस्तियों के मुधार की नीति का सक्रियता में पालन करने का निश्चय किया है। गंदी बस्तियों के मुधार के लिए 1974-78 में कुल मिलाकर 43 करोड़ रुपए खर्च किए गए थे, उसके मुकाबले में 1978-83 की अवधि में 190 करोड़ रुपए के परिव्यय की परिकल्पना की गई है। राज्यों को बड़े पैमाने पर इस कार्यक्रम को तत्परता से आगे बढ़ाना होगा। यदि वे द्वारा इंद्रोजन के लिए अपने यहां के शहरी खेतों के सम्पर्क वर्ती पर कर लगा कर अतिरिक्त साधन जुटाने का जिम्मा लेंगे तो सरकार को उनके प्रयत्नों की अनुपूर्ति करने में लालू होंगी। सरकार राज्यों से परामर्श करके इस आत की जांच करेगी कि गंदी बस्तियों को सुधारने के कार्यक्रम को किस प्रकार तेजी से पूरा किया जा सकता है जिससे कि नगरों में रहने वाले गरीबों के रहन-सहन की बशा में सुधार हो।

57. शिक्षा के खेत में प्राथमिकताओं के पुनर्निर्धारण में सरकार ने सार्वजनिक शिक्षा को सबसे अधिक महत्व दिया है। तदनुमान 1979-80 की केन्द्रीय आयोजना में प्रीकृत शिक्षा की व्यवस्था को बढ़ावा जा रहा है और यह व्यवस्था अब केन्द्रीय आयोजना में शिक्षा के लिए निर्धारित 84 करोड़ रुपए के कुल परिव्यय के लगभग 20 प्रतिशत के बराबर होगी।

58. अब यह अधिक रूप में स्वीकार किया जाने लगा है कि शृंखि और ग्राम-उद्योगों के विकास के कार्यक्रमों में नज़र तक पर्याप्त प्रगति नहीं होगी जब तक कि ग्रामीण जनना प्रेरणात्मक कौशल प्राप्त नहीं कर सके तथापि, ग्रामीण युवकों को इन कौशलों का प्रशिक्षण प्रदान करने के कार्य में बहुत कम प्रगति हुई है। इसका एक कारण तो यह है कि ऐसे प्रशिक्षण के लिए किसी प्रभावोत्पादक कार्यक्रम की कमी है और दूसरे, कौशल को पूँजी के साथ जोड़ने वाले उचित संगठन का अभाव है। चूंकि यह प्रशिक्षण उत्पादन कार्यक्रम की सफलता के लिए एक अत्यावश्यक पूर्ववर्ती घर्त है इसलिए सरकार का प्रस्ताव है कि वर्ष के शीराज, ग्राम-नियोजन (सेल्फ-एम्लायमेंट) के लिए ग्रामीण युवकों के प्रशिक्षण के कार्यक्रम के बारे तैयार होने शुरू, उसके लिए विशेष व्यवस्था कर दी जाए।

59. यदि आर्थिक विकास के द्वारा अपने लोगों के जीवन स्तर में कोई ठोस मुधार करना है तो निसंवेद जनसंघ्य की वृद्धि की वर्तमान वर-

पर नियंत्रण रखना होगा। अधिकारी विकास पिछले वर्षों में परिवार नियोजन के प्रति नए वृद्धिकोण अपनाएं जाने के परिणामस्वरूप इस कार्यक्रम को भारी धक्का लगा है। हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि नए चालू किए गए परिवार कल्याण के कार्यक्रम को ठोस आधार पर रखें ताकि 33 प्रति हजार की वर्तमान जन्मदर को कम करके 1982-83 में 30 प्रति हजार की जन्मदर प्राप्त करने का राष्ट्रीय उद्देश्य पूरा किया जा सके। सामुदायिक स्वास्थ्य सेवक योजना, जो अक्टूबर 1977 में 741 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में शुरू की गई थी, ग्रामीण खेतों में प्रारंभिक विकिसा सुविधाओं का विस्तार करने की दिशा में जनता सरकार द्वारा उठाया गया एक नया उल्लेखनीय कदम था। ये के एक-तिहाई दिसंसे को 1979-80 में और पुरे देश को 1982-83 तक इस योजना के अंतर्गत लाने का प्रस्ताव है।

60. कार्य कुण्डनता के साथ-साथ मित्रत्वयता की जहरत को छान में रखते हुए आयोजना भिन्न व्यय को जहां तक वह बहुत जरूरी था वहां तक सीमित कर दिया गया है।

61. रक्षा व्यय के लिए 3050 करोड़ रुपए का अनुमान लगाया गया है जबकि चालू वर्ष में इसकी राशि 2845 करोड़ रुपए की थी।

62. आबू संबंधी आर्थिक महायना (मन्मही) के लिए 560 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है जो चालू वर्ष की राशि से 10 करोड़ रुपए कम होगी। उद्योगों के संबंध में वी जाने वाली आर्थिक सहायता के लिए अगले वर्ष में 448 करोड़ रुपए की व्यवस्था भी गई है जबकि किंवदं चालू वर्ष में इसके लिए 319 करोड़ रुपए रखे गए थे।

63. अब परिशोधन प्रभारों के लिए 2161 करोड़ रुपए की राशि रखी जा रही है जो चालू वर्ष की राशि से लगभग 304 करोड़ रुपए ज्यादा होगी, यह वृद्धि प्रमुख रूप से आन्तरिक झण्डों के कारण होगी।

64. राज्यों की 232 करोड़ रुपए की सांविधिक अनुदान (स्टें-पूर्टी प्रान्ट) विद्या जाएगा, इसकी तुलना में चालू वर्ष में इन अनुदानों की राशि 514 करोड़ रुपए की थी। अगले वर्ष की व्यवस्था सातवें वित्त व्यापार की निकारिश पर आवारित है। ग्रामीणों ने कुछ राज्यों को, उन की निवाल व्याज की देनदारी को पूरा करने के लिए और प्रशासन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए, कुछ अतिरिक्त अनुदान दिए जाने की भी सिफारिश की है। इन इस समय इन प्रयोजनों के हेतु अनुदान देने के लिए कोई व्यवस्था नहीं की है और मैं पूरक धनराशि के लिए अनुरोध सेकर सवान के सम्मुख फिर उपरित्य होंगा जब कि संबंधित राज्य सरकारों प्रशासन के स्तर को ऊंचा उठाने की योजनाओं से संबंधित क्रियात्मक कार्यक्रम तैयार करके उनको अन्तिम रूप दे दी और ग्रामीण की सिफारिशों के अनुमान लिवल व्याज की देनदारियों का निधारण कर दिया जाएगा।

65. सरकार यह समझती है कि बढ़ते हुए सरकारी व्यय के कारण सम्मानित सदस्य भी उसकी नस्ह ही विनित होंगे। इसलिए यह जरूरी है कि इस व्यय को बढ़ने से रोका जाए और यह मुनिषित किया जाए कि धनराशियों का उपयोग मामान्य द्वितीय बढ़ावा देने के लिए कारबर हो। इसलिए सरकार ने उपयुक्त विचारणीय विषयों के के साथ एक ग्रामीण नियुक्त करने का फैसला किया है जो सरकारी व्यय की व्यापक रूप से जात्य करेगा। यह ग्रामीण भ्रम्य व्यापों के साथ साथ इस बात की भी जांच करेगा कि वृद्धि की दर बढ़ने में और गरीबी को कम करने में सरकारी व्यय के अधिक प्रभावोत्पादक बढ़ाने के लिए अर्थोंपाय के संबंध में मुझाव देंगे।

66. जहां तक प्राप्तियों का संबंध है, अनुमान है कि करों की मौजूदा दरों से 1979-80 में 10822 करोड़ रुपए का सकल फर-राजस्व

प्राप्त होगा और इस प्रकार चालू वर्ष के संशोधित अनुमान से 658 करोड़ रुपए प्रधिक प्राप्त होंगे। इस घृद्धि में संघ उत्पाद शुल्कों से 381 करोड़ रुपए और निगम तथा आय करों से 248 करोड़ रुपए मिलेंगे।

67. जैसा कि पहले कहा जा चुका है, सातवें वित्त आयोग की सिफारियों के अनुसार भ्रगले वित्तीय वर्ष से राज्यों को बेंद्रीय करों और शुल्कों में से पहले से काफी ज्यादा धन-राशि दी जाया करेगी। करों के मौजूदा स्तर पर अनुमान है कि भ्रगले साल राज्यों का हिस्सा 3235 करोड़ रुपए का होगा जो कि चालू वर्ष में उनके हिस्से से 1278 करोड़ रुपए ज्यादा है। इसके परिणामस्वरूप केन्द्र का निवल (नेट) कर-प्रस्ताव 7587 करोड़ रुपए का होगा जो कि चालू वर्ष की तुम्हारा में 620 करोड़ रुपए कम है।

68. बाजार ऋणों से 1850 करोड़ रुपए प्राप्त होंगे जब कि चालू वर्ष में 1653 करोड़ रुपए प्राप्त हुए। अनुमान है कि बापसी अदायारी और व्याज की देनदारियों को पूरा करने के बाद निवल विदेशी महायाता 878 करोड़ रुपए की होगी जिसमें नए ऋणों की अन्तर्गत निकाली गई रकमें भी शामिल हैं। अत्यवचत संग्रह से 650 करोड़ रुपए की प्राप्ति होगी। राज्यों द्वारा बापस भ्रवा किए गए ऋणों की राशि, जिसमें अर्थोपाय अग्रिम शामिल नहीं है, 554 करोड़ रुपए की होगी जब कि चालू वर्ष में यह राशि 754 करोड़ रुपए की है। यह भी सातवें वित्त आयोग की सिफारियों के अनुसार अष्ट्रणशोधन कार्यक्रम के पुनर्निर्धारण के कारण हुई है।

69. 1979-80 के लिए केन्द्रीय सरकार को कुल प्राप्तियाँ 16551 करोड़ रुपए की होंगी। आने वाले वर्ष के लिए कुल व्यय 18526 करोड़ रुपए का होगा। इस प्रकार करों की वर्तमान वर्षों के अनुसार बजट में कुल भिलाकर 1975 करोड़ रुपए का बाटा रहेगा।

भाग-ख

70. अब मैं अपने नए कर-प्रस्तावों पर भाता हूं।

71. जाहिर है कि इतना बड़ा घाटा एक बड़े कर प्रयत्न के बिना पूरा नहीं किया जा सकता। किन्तु, मेरे हन कर-प्रस्तावों का लक्ष्य आवश्यक साधन जुटाने के अलाया उन तीन उद्देश्य की भी पूरा करना है जो, मैं समझता हूं, इस सदन में हर अप्रियता को स्वीकार्य होंगे। ऐसे देश में जहां अधिकांश जनता गरीबी की रेखा (पार्टी लालन) से नीचे का जीवन अवृत्ति कर रही हो, आय की इन विषमताओं को घटाकर कम से कम कर देना होगा। इन विषमताओं के कारण विलासितापूर्ण उपभोग होता है जिससे बजत की प्रवृत्ति और परिश्रम करने की इच्छा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिए, कर नीति ऐसी होनी चाहिए जिससे ये विषमताएं कम हों।

72. मेरे कर प्रस्तावों का दूसरा उद्देश्य उत्पादन को बढ़ाना और अपृथक्य को रोकना है। गरीबी को भिटाने के लिये सर्वप्रथम उत्पादन को बढ़ाने की ज़रूरत होगी। चूंकि साधनों की बढ़त की है इसलिए कर नीति के जरिये साधनों का व्याप्ति और अनुत्पादक कार्यों की और से हटाकर उत्पादक प्रयोजनों के लिए राशि जाना चाहिए। इसके द्वारा ऐसी वस्तुओं के उपभोग (कंजम्पालन) को भी निरुत्पातित किया जाना चाहिए जो निष्क्रिय ही लोगों के स्वास्थ्य को हानि पहुंचाती है।

73. इन कर-प्रस्तावों का तीसरा उद्देश्य यह है कि कृषि उत्पादन को अधारा देकर और उत्पादन की अम प्रधान तकनीकों को प्रोत्साहन देकर तथा बड़े उद्योगों के संबंध में सधू और कुटीर उद्योगों की प्रतियोगी क्षमता बढ़ाकर बेरोजगारी और कम-रोजगारी को खत्म किया जाए।

74. सबसे पहले मैं प्रत्यक्ष करों को लेता हूं।

75. मैं सभी श्रेणियों के निगम-भिन्न करदाताओं के मामले में आय-कर पर संघ के प्रयोजनों के लिए सहने वाले अधिभार (सरकार) की दर को 15 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने का प्रस्ताव करता हूं। इस प्रस्ताव का अन्तर यह होगा कि वैयक्तिक आय-कर की सीमान्तिक दर जो इस समय 69 प्रतिशत है, बढ़ाकर 72 प्रतिशत हो जाएगी। इस

उपाय से एक वर्ष में 46 करोड़ रुपए का अतिरिक्त राजस्व प्राप्त होगा। किन्तु 1979-80 में इससे केवल 37 करोड़ रुपए की प्राप्ति होगी। यह एक छोटा सा त्याग है जिसे अपने गरीब भाइयों के हित में करने के लिए मैं उन 35 लाख करदाताओं को कह रहा हूं जो हमारी कुल जनसंख्या का बहुत छोटा भाग है और जो देश की आय का बहुत बड़ा भाग प्राप्त करने हैं।

76. मैं जानता हूं कि राज्य सरकारें संघ के प्रयोजनों के लिए अधिभार लगाए जाने के बिरद हैं व्योंगी अधिभार से मिलने वाले राजस्व में राज्यों को कोई इस्ता नहीं मिलता लेकिन मैंने अपने दूसरे कर-प्रस्तावों में इस बात का व्यापर रखा है कि केन्द्र के अतिरिक्त कर-प्रयत्न से होने वाली प्राप्तियों में राज्यों को भी उचित हिस्सा मिले।

77. वित्त अधिनियम, 1978 में दी गई वर अनुमूली के अन्तर्गत जिन मामलों में कराधार योग्य आय, छूट की सीमा से मामूली सी अधिक हो, वर्ती 10,000 रुपए से ऊपर की आय पर कर की देनदारी 70 प्रतिशत तक सीमित की गई है। यह व्यवस्था कई मामलों में कुछ कड़ी पड़ती है। सीमान्तिक मामलों में कुछ नरमी बरतने के लिए मैं ऐसे मामलों में देय कर को 10,000 रुपए से ऊपर की आय पर 30 प्रतिशत तक सीमित करने का प्रस्ताव करता हूं। इसका साधा उन लोगों को मिलेगा जिनकी आय 12,000 रुपए तक है।

78. साधनों की नितान्त आधारशक्ति को देखते हुए, मैं आयकर दाताओं के लिए अनिवार्य निशेष योजना को और दो साल के लिए चालू रखने का प्रस्ताव करता हूं। इससे वित्तीय वर्ष 1979-80 में 170 करोड़ रुपए के अतिरिक्त साधन पैदा होने।

79. धन की असमानताओं का तो आय की असमानताओं से भी अधिकत्य है। इसलिए मैं निवल धन के उच्च खंडों (स्लैब) पर धन-कर की दरों को बढ़ाने का प्रस्ताव करता हूं। अब यह दर 10 लाख रुपए से ऊपर और 15 लाख रुपए के बीच के निवल धन पर 2.5 प्रतिशत की वर्तमान दर के स्थान पर 3 प्रतिशत होगी और 15 लाख रुपए से ऊपर के निवल धन पर 3.5 प्रतिशत की वर्तमान दर के स्थान पर 5 प्रतिशत होगी। 10 लाख रुपए तक के खंडों पर धन-कर की दरों में कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा। जिन हिस्त अविभक्त कुटुम्बों में छूट की सीमा से ऊपर स्वरूप रुप से निवल धन रखने वाले एक या अधिक सदस्य हो उन पर सहने वाली दरों में लवनुपर्य परिवर्तन कर दिया जाएगा। इन परिवर्तनों से एक वर्ष में 6.6 करोड़ रुपए का अतिरिक्त राजस्व प्राप्त होगा। किन्तु धन-कर की नई दरें निर्धारण वर्ष 1980-81 से ही लागू होंगी इसलिए 1979-80 में इससे कोई अतिरिक्त राजस्व नहीं मिलेगा।

80. यह तो मानना ही होगा कि मिर्क प्रत्यक्ष करों की दरों में परिवर्तन कर देने से ही हम आय और धन की विषमताओं को सहनीय स्तर तक नहीं घटा सकते। जैसा कि सर्वन को मालूम है, कर-अपवर्तन (टैक्स इवेजन), जोकि काला धन पैदा होने का मूल कारण है, प्रत्यक्ष-करों के प्रयोगी स्वरूप को बहुत अधिक प्रभावित करता है। काला धन एक ऐसा बुन है जो कि अनुमूली अर्थात् व्यापक्य को काट रहा है। यह ज़रूरी है कि हमारे कर सम्बन्धी कानूनों पर कारगर ढंग से प्रभाल करके इस मुरार्ह का सामना किया जाए। मैं सदन को यह आवश्यक देना चाहूँगा कि मैं अत्यल्प उत्साह और शक्ति के साथ अपने भ्रापको इस काम में सहायता दूँगा।

81. चूंकि मैं वैयक्तिक आयों पर साथ-कर के अधिभार को धका रहा हूं इसलिए मैं सोचता हूं कि नियमित धन की भी राजकोष में कुछ और ज्यादा अंशवान देना चाहिए। तदनुसार मैं प्रस्ताव करता हूं कि कम्पनियों के मामले में आयकर सम्बन्धी अधिकार को 5 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.5 प्रतिशत कर दिया जाए। इससे उन पर भारी बोझ नहीं

पहेंगा, क्योंकि निगमों पर नगने वाले कर की प्रभावी दर निर्दिष्ट दरों गे कर है। इन उत्तरों में ताका 35 करोड़ रुपए के अतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति होगी। किन्तु 1979-80 के दौरान केवल 28 करोड़ रुपए ही प्राप्त होगे।

82. पूँजी-अधिकारियों (केपिटल गेन्स) के काराधान की योजना का 1977 में कई एक दिशाओं में संशोधित किया गया था। एक परिवर्तन यह था कि यदि परिम्पत्ति लिही से प्राप्त रकम को, उसके छः महीने के अन्तर-मन्त्रदर कुछ विनिष्ठ परिम्पत्तियों में फिर से लगा दिया जाए तो ऐसे सामले में दीर्घावधिक पूँजी-अधिकारियों पर लगने वाले आयकर से छूट मिलेगी। चूंकि परिम्पत्ति के भालिकों को अधिकतर ये पूँजी-अधिकारियों कोई प्रयास किए बिना प्राप्त होते हैं इसलिए इस छूट से आय का उपार्जन करने वाले लोगों के मुकाबले, परिम्पत्तियों के भालिकों को अनुचित लाभ प्राप्त होता है, और इस प्रकार उनमें समाज में विषमताएँ बढ़ती हैं। इसलिए मैं, 28 फरवरी, 1979 के बाद किए जाने वाले अन्तरणों के सम्बन्ध में, पूँजी-अधिकारियों इस छूट को समाप्त करने का प्रस्ताव करता हूँ। इस उपाय से प्रति वर्ष 14 करोड़ रुपये अतिरिक्त राजस्व प्राप्त होगा। चूंकि पूँजी-अधिकारियों के सम्बन्ध में वेष्याएँ कर की आदायगी नहीं की जाती, इसलिए 1979-80 में इससे राजस्व की कोई वृद्धि नहीं होगी।

83. जीवन खोमा प्रीमियमों, भविष्य निधि अंशदानों तथा बचत करने के अन्य अनुमोदित रूपों में जो दीर्घावधिक बचतों की जाती हैं, वे हालांकि कुछ बांधनीय सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों को पूरा करती हैं फिर भी उनके सम्बन्ध में मिलने वाली मौजूदा रियायतों से उच्चतर आदायगी के करवाताओं को ही अपेक्षाकृत अधिक अनुमान में लाभ मिलता है। इस समय, अर्हताप्राप्त बचत के पहले 5000 रुपये पर 100 प्रतिशत, उससे अगले 5000 रुपये पर 50 प्रतिशत तथा शेष पर 40 प्रतिशत की कटौती की जा सकती है। किन्तु मेरे प्रस्ताव के अनुसार जबकि अर्हताप्राप्त बचतों के पहले 5000 रुपये पर 100 प्रतिशत कटौती का हक कायम रहेगा, शेष पर 5000 रुपये की ऐसी बचतों पर अर्हता प्राप्त कटौती को बढ़ाकर 35 प्रतिशत कर दिया जाएगा और बचत की शेष राशि के सम्बन्ध में इसे 20 प्रतिशत कर दिया जाएगा। इस उपाय से भी प्रतिवर्ष 9.6 करोड़ रुपये की प्रामदनी होगी। किन्तु वित्तीय वर्ष 1979-80 में 7.6 करोड़ रुपये की प्राप्ति होगी।

84. मेरा प्रस्ताव है कि रजिस्टर्ड फर्मों के द्वारा वेष्याएँ कर की आदायगी की प्रारम्भिक सीमा को 30,000 रुपये से कम करके 20,000 रुपये कर दिया जाए। 1979-80 में इस उपाय से 12 करोड़ रुपये के अतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति होगी।

85. देश में बड़े योग्याने पर विश्वमान वेरोजगारी इस बात की अपेक्षा करती है कि पूँजी-प्रधान तकनीकों की जगह ए हमें अम-प्रधान तकनीकों को ही बढ़ावा देना चाहिए। पर्याप्त यह सच है कि कुछ एक उच्चोग्धनों में तकनीकों के चुनाव का क्षेत्र सीमित होता है, फिर भी जहां कहीं व्यवहार्य हो हमें अम-प्रधान उत्पादन प्रणाली को ही सबसे अधिक प्रस्तुत करना चाहिए। हमारे राजकोषीय कानून तथा कर-सम्बन्धी रियायतें खास तौर पर ऐसी होती चाहिए जिनसे उत्पादन की ऐसी तकनीकों को बढ़ावा मिले, जिनसे रोजगार के ज्यादा अवसर पैदा हों।

86. इसलिए, मैं प्रथमांतरियों तथा कर-प्रशासकों की एक विशेषका समिति नियुक्त करने का प्रस्ताव करता हूँ जो हमारे कर सम्बन्धी कानूनों में, खासकर निगम कर और केंद्रीय उत्पाद-शूल से सम्बन्धित कानूनों में भी यह रियायतों के, उच्चोग में इस्तेमाल की जाने वाली उत्पादन की तकनीकों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्याय करेगी और ऐसी सिफारियों करेगी जिनसे उत्पादन के अम-प्रधान तरीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। समिति के गठन और उसके

विचारणीय विषय शीघ्र ही तय कर दिए जाएंगे और समिति से कहा जाएगा कि वह अपनी रिपोर्ट काम से कम समय में प्रस्तुत कर दे।

87. पूँजी नियोजन के सम्बन्ध में दी जाने वाली कर सम्बन्धी रियायतों में मेरे एक रियायत है प्रायकर प्रधिनियम 'मेरे कर की छुटी' की व्यवस्था। इस समय यह रियायत, उन सभी औद्योगिक उपकरों के सम्बन्ध में उपलब्ध है जो पहली प्रतील 1981 में पहले उत्पादन करना शुरू कर देंगे। मैं उन औद्योगिक उपकरणों के मामलों में इस रियायत को वापस लेने का प्रस्ताव करता हूँ जो प्रायकर प्रधिनियम की आदायगी अनुसूची में दिए गए गैर-प्रायमिकता प्राप्त उद्दीपों में लगे हुए हैं और जो 31 मार्च 1979 के बाद उत्पादन का काम शुरू करेंगे।

88. अभी बाल के बचों में वाणिज्यिक बैंकों, खासकर मरकारी बैंक के बैंकों से कहा गया था कि वे ग्रामीण बैंकों में जाएं प्रीर वहां अपने अर्ह-कार्यक्रम का विस्तार करें। देशी हालों में बैंकिंग कार्य को बढ़ावा देने वाला वेहाती अधिग्रंथों (रुल एडवांज) के सम्बन्ध में जोखिम उठाने के लिए अनुमूलित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा अपनी वर्तमान प्राप्तदानी में से पर्याप्त धन की व्यवस्था करने के उद्देश्य से उन्हें सहायता पहुँचाने के लिए मैं प्रायकर प्रधिनियम में यह संशोधन करने का प्रस्ताव करता हूँ कि अनुमूलित वाणिज्यिक बैंक की ग्रामीण शास्त्रालयों द्वारा दिए गए अधिग्रंथों के सम्बन्ध में इस अनुमूलित बैंकों द्वारा अशोध्य तथा संविधान अधिग्रंथों के लिए की जाने वाली व्यवस्था की राशि के सम्बन्ध में कटौती की मंजूरी दी जाए। पर इस प्रकार की कटौती ग्रामीण शास्त्रालयों द्वारा दिए गए कुल प्रीसल अधिग्रंथों के 1.5 प्रतिशत तक सीमित होगी। इस संशोधन से 1979-80 में यह संशोधन करने के राजस्व की हानि होगी, पर यह हानि एक अच्छे काम के लिए होगी।

89. मैं हृषि पुनर्वित और विकास निगम को जो छूट देना चाहता हूँ उसका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ। यह छूट उसी छृट के अनुरूप है जो भारतीय औद्योगिक विकास बैंक को पहले से ही मिल रही है। इस निर्णय से प्रति वर्ष 5 करोड़ रुपये के राजस्व का नुकसान होगा। अनुमान है कि 1979-80 में यह नुकसान 10 करोड़ रुपये का होगा क्योंकि 1978-79 में अदा किए गए अधिग्रंथ करों को भी वापस करना होगा।

90. इस समय कर-प्रोग्राम लाभों का हिसाब लगाते हुए कम्पनियों और सहकारी समितियों द्वारा ग्रामीण विकास के अनुमोदित कार्यक्रमों पर किए गए ऊर्जे की कटौती कर दी जाती है। इस प्रयोजन के लिए, कार्यक्रम को एक "विहित प्राधिकरण" से अनुमोदित कराना पड़ता है जो कि एक अन्तर-मन्त्रालयिक समिति है और जिसका अध्यक्ष कुछ और सिवाय मन्त्रालय का सचिव है। कम्पनियों तथा महकारी समितियों ने ग्रामीण विकास कार्यक्रम में काफी विलक्षणी दिखाई है। ग्रामीण विकास की इस नरह की योजनाओं को शीघ्र मंजूरी देने के लिए मैं यह प्रस्ताव करता हूँ कि अब से इन योजनाओं को राज्य स्तर पर दी एक ऐसी समिति द्वारा अनुमोदित किया जाए जिसमें प्रायकर प्रधान सभा राज्य सरकार द्वारा मनोनीत उसका एक वरिष्ठ अधिकारी हो।

91. मैं यह भी प्रस्ताव करता हूँ कि ग्रामीण विकास कार्यक्रम के कार्यालयों के लिए व्यक्तियों को प्रावधानक प्रशिक्षण देने के कार्य में लगी हुई अनुमोदित संस्थाओं को प्रायकरवाताओं द्वारा दिए गए वानों को प्रायकर से मुक्त कर दिया जाए।

92. इस समय, कारबाह और धूति (प्रोफेशन) में लगे हुए प्रायकरवाता ही ग्रामीण विकास के कार्यक्रमों में लगी हुई अनुमोदित संस्थाओं को दिए गए वोनों के मंदिर में 100 प्रतिशत की कटौती का लाभ पाने के हकदार हैं। मैं इस रियायत को अन्य श्रेणियों के ग्रायकरवाताओं पर भी लागू करने का प्रस्ताव करता हूँ, इस तरह की रियायत वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए अनुमोदित वैज्ञानिक अनुसंधान संगठनों, विश्वविद्यालयों, कालेजों और अन्य संस्थाओं को दिए गए वानों पर भी दी जाया करेंगी।

93. एक ऐसी व्यवस्था करने का प्रस्ताव भी किया जाता है जिसके अन्तर्गत संघीय दुध महकारी समितियों के कर्त्योग्य लाभों का हिसाब लगाने समय इनमें संबद्ध प्राथमिक सहकारी समितियों के सवायों के पश्चात् भी श्रीमा के लिए उन संघीय समितियों द्वारा आवा की गई किसी की कटौती करने की अनुमति दी जाएगी।

94. शुम्खी (मासाहन) की खेती करने के लिए प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से मैं यह प्रस्ताव करता हूँ कि नियंत्रित परिस्थितियों के अन्तर्गत खुट्टी उगाने के कारबाह से हूँने वाली आय की एकत्रितीर्थी राशि आवा 10,000 रुपए की राशि को इससे से जो भी अतीव हो, आयकर से मुक्त किया जाए।

95. जैसा कि सम्मानित सदस्यों को मालूम है, वित्त (संख्या 2) प्रधिनियम, 1977 के अन्तर्गत खादी और प्रामोटोरोग आयोग की माय-कर से मुक्त किया गया है। अब यह प्रस्ताव किया जाता है कि राज्य प्रधिनियमों के अन्तर्गत स्थापित किए गए राज्य खादी और ग्रामोदयोग बोर्डों की आय को आयकर से मुक्त किया जाए।

96. उपभोक्ता सहकारी समितियों उपभोक्ताओं को उचित कीमतों पर सामान उपलब्ध कराने का प्रशंसनीय काम करती रही है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली के संबंध में, जिसका आगे विकास होता है, अपनी उचित भूमिका आवा करने के लिए इस तरह की समितियों के विकास का प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से मैं यह प्रस्ताव करता हूँ कि इस प्रकार की समितियों के माले में मौजूदा कर-मुक्त लाभों के स्तर को 20,000 रुपये से बढ़ा कर 40,000 रुपए कर दिया जाए।

97. नियंत्रित बाजार विकास छूट के सम्बन्ध में आयकर प्रधिनियम की धारा 35(ब) के दायरे की पिछले वर्ष सीमित कर दिया गया था। मैंने पहले इस बात का जिक्र किया था कि चालू वर्ष में नियंत्रित में विरावट ग्राही है और उसमें वृद्धि करने की आवश्यकता है। यह एक दीर्घावधि प्राधार पर नियंत्रित बाजार का विकास करने के लिए नियंत्रितात्मकों को सक्षम बनाने के उद्देश्य से नियंत्रित बाजार विकास छूट के दायरे को बढ़ाने का प्रस्ताव है। आयकर प्रधिनियम की धारा 35(ब) के अन्तर्गत अब सभी नियंत्रितात्मकों को अहंताप्राप्त व्यय पर 133.3 प्रतिशत की समान दर पर नारित कटौती की सुविधा उपलब्ध होती। इस प्रयोजन के लिए आयकरदाता द्वारा अपने कारबाह के संचालन के दौरान भारत के बाहर अपनी वस्तुओं, सेवाओं अथवा मूल्यांशों के बारे में विज्ञापन अथवा प्रकार पर किए गए खर्च को अहंताप्राप्त व्यय में शामिल किया जाएगा। इस विवाहन के परिणामस्वरूप प्रति वर्ष लगभग 5 करोड़ रुपए के राजस्व का नुकसान होगा। परन्तु, 1979-80 में यह नुकसान 4 करोड़ रुपए का होगा।

98. हिन्दी में तथा अन्य भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य पुस्तकों के लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए मैं यह प्रस्ताव करता हूँ कि इस प्रकार के पुस्तक लेखकों को, इस संबंध में होने वाली आय के 25 प्रतिशत के बराबर की कटौती किए जाने की अनुमति दी जाए। इन भाषाओं में सब्दान्तर और विश्वविद्यालय सीरार करने वाले लेखकों को भी अपनी कर्त्योग्य आय का हिसाब लगाने के प्रयोजन के लिए इस प्रकार की कटौती का लाभ मिलेगा। यह विवाहन करनिधारण वर्ष 1980-81 के लिए तथा उसके बाद के चार वर्षों के लिए उपलब्ध होगी।

99. एक और जटां मैं कर-प्रवर्तन (टेक्स एवेजन) के विलाफ अभियान तेज करना चाहता हूँ क्योंकि यह भी आदृशा का आयकर के मामलों को पहले की प्रेषणा अधिक तत्वरता के साथ निपटाया जाए। इस समय, यदि आयकर आवृत्ति किसी आवेदन-पत्र के संबंध में निपटना मुद्दों पर कोई आपत्ति उठता है तो आयकर-परिनिधारण-आयोग (इकम टेक्स सेटलमेंट कमीशन) को ऐसे मामले में कोई कार्रवाई करने

की मना ही नहीं है। प्रत्यक्ष-कर-विधि समिति ने यह सिफारिश की है कि परिनिधारण के आवेदन-पत्र को तभी नामंजूर किया जाए जबकि आयोग हस बात में मनुष्ट हो जाए कि प्रायुक्त ने उपयुक्त तथा विक्षिमान्य कारणों के आधार पर आपत्ति उठाई है। इस विफारिश को हृषि जर्ता के साथ कार्यान्वयन करने का प्रस्ताव रखा जाता है कि आयकर प्रायुक्त द्वारा उठाई गई आपत्ति को रद्द करने से पहले परिनिधारण आयोग की उसकी सुनवाई कर लेनी चाहिए।

100. प्रत्यक्ष-कर-विधि-समिति ने आय-कर अधिनियम और धन-कर अधिनियम में कुछ संशोधन करने का प्रस्ताव किया है जिसका उद्देश्य प्राय और धन के परिवार के भीतर अन्तरणों के जरिये कर्त्ता रोकने की प्रक्रिया पर रोकथाम से संबंधित उपलब्धों में विद्यमान दृष्टियों को दूर करना है। मैंने उसकी विफारिश मान सी है और उन्हें वित्त विधेयक के जरिये कार्यान्वयन किया है।

101. जैसा कि मैंने इससे पहले बताया है, मेरे प्रस्तावों का बुसरा उद्देश्य समाज के सम्बन्ध लोगों के रहन-सहन की शैली पर रोक लगाना है जिसमें कि उसका प्रवर्तनात्मक असर बहन और निवेदा पर प्रतिकूल प्रभाव न डाले। इस सम्बन्ध में लक्षरी होटलों में आवास तथा मनोरंजन के लिए जो ग्राम-पन्थ बच्चे किया जाता है उन दर गंभीरता से विकार करता जाती है। इन लक्षरी होटलों में इस तरह के प्रवर्तनात्मक उपभोग की रोकने के उद्देश्य से होटलों की सफल प्रतिष्ठियों पर एक नया कर लगाने का प्रस्ताव रखा जाता है। युक्ति मेरा इरावा यह है कि राज्य, होटलों में प्रतिष्ठियों को परसी जाने वाली आदृश वस्तुओं और ऐप विद्युतों पर अब तक जो विक्री कर लगाते रहे हैं उसे जारी रखें, लेकिन इन वस्तुओं की विक्री से ग्राम-होटल वाली रकम को कर आधार (टैक्स बेस) में शामिल नहीं किया जाएगा। इस नए उपयोग के बारे में घोरे तैयार किए जा रहे हैं और इस संबंध में आवश्यक कानून योग्य ही संसद में पेश किया जाएगा।

102. वित्त-विधेयक के माध्यम से आयकर विधि में जो अन्य संशोधन किए जा रहे हैं उनका कोई ज्यादा महत्व नहीं है और अधिकांश संशोधन वर्तमान उपलब्धों के स्थानीकरण के लिए तथा उनसे विक्षिप्त बनाने के लिए हैं।

103. कर संबंधी इन सभी उपायों से पूरे वर्ष में कुल मिलाकर 101.2 करोड़ रुपये के अतिरिक्त राजस्व पाप्त होंगे और 1979-80 में इन से 58.6 करोड़ रुपये की प्राप्ति होती। 1979-80 में इसमें से लगभग 12 करोड़ रुपये राज्यों को उनके हिस्से के रूप में मिलेंगे। इसके अतिरिक्त आयकरदाताओं के लिए अनिवार्य निषेप योजना को जारी रखने से 1979-80 में 160 करोड़ रुपये के अतिरिक्त साधन प्राप्त होंगे।

104. अब मैं अप्रत्यक्ष करों की ओर आता हूँ।

105. मैं संभवतः उन सहवार्पूर्ण राहतों का उल्लेख करना चाहूँगा जो मैं उत्पाद-शुल्कों (एक्साइज डिप्टी) में देने का प्रस्ताव करता हूँ। सभी राजायिक उर्जकर्त्ता उत्पाद-शुल्कों की वर्तमान दरों में 50 प्रतिशत की कमी कर दी जाएगी। इसका अर्थ यह होगा कि यूरिया पर, जो सबसे अधिक मरुत्वपूर्ण रासायनिक उर्जरक है, बुलियादी केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क मूल्यानुसार 15 प्रतिशत से घट कर 7.5 प्रतिशत, और इकहरे (मिगल) तथा निरुरे सुपर फास्टेट जर्वरक पर मूल्यानुसार 7.5 प्रतिशत से घट कर 3.75 प्रतिशत हो जायेगा। यह कमी आयातित उर्जकर्त्ता पर लगाए जाने वाले प्रतिसंतुलनकारी शुल्कों में भी तदनुरूप प्रतिश्वास होती है। इस परिवर्तन के फलस्वरूप यूरिया की कीमत में प्रति मीट्रिक टन लगभग 100 रुपये की कमी करना संभव होगा। उत्पाद शुल्क में अब योधित की गई राहत के संबंध में अन्य किलों के उर्जकर्त्ता की कीमत भी अपेक्षाकृत कम हो जाएंगी। इस निर्णय के कारण केन्द्रीय उत्पाद-शुल्कों के अन्तर्गत 75.6 करोड़ रुपये तथा सीमा-शुल्कों के अन्तर्गत 30 करोड़ रुपये के राजस्व का बलिवान करना पड़ेगा।

106. शालांकि, वेहानी इलाकों में विजिती लगाने के काम का विस्तार होने से विजिती में जनते बाले पापमेटों की संख्या बड़ी तेजी से घट रही है किंवद्दि हमारे देश के अधिकार भागों में किसानों को भीजाए से जनते बाले पापमेटों का हस्तेमाल करना पड़ता है। इस बड़े बर्ण को ग्रहण देने के एक उपाय के रूप में शुल्क डीजल टेल पर 155.72 रुपये प्रति किलोमीटर की दर से लगाने वाले मौजूदा उत्पाद-शुल्क के स्तर को कम कर के 75 रुपये प्रति किलोमीटर करने का प्रस्ताव रखा गया है। मरकार को मालूम है कि इस टेल का केवल 45 प्रतिशत भाग ही कुछ क्षेत्र में हस्तेमाल में आया जाता है। कुक्कि इस टेल के अन्तिम उपयोग (एंड यूज) पर नियन्त्रणी रखना कठिन है और वृक्ष इसके शेष भाग में से भी काफी अधिक मात्रा का उपयोग विजिती पैदा करने के लिए तथा लम्बे उद्योगों के द्वारा किया जाता है इसलिए उत्पाद-शुल्क में की गई इस कमी का लाभ, बिना में भाव के, सभी उपभोक्ताओं तक पहुंचाने का प्रस्ताव किया जाता है। इस विधायक के परिणाम-स्वरूप राजकोष को प्रतिवर्ष 12.40 करोड़ रुपये के राजस्व की हाजिर होगी।

107. ग्रन्थ कुपि उद्योग निगमों तथा केन्द्रीय मरकार द्वारा आयानित पावर टिलरों को भी पूरी तरह सीमा-शुल्कों से मुक्त करने का प्रस्ताव रखा जाता है। क्योंकि इन उपकरणों से छोटी जोगों में खेतों की ऐदावार बढ़ाने में सहायता मिलेगी। सम्मानित सदस्यों को मालूम होगा कि देश में जनते बाले पावर टिलर तो पहले से ही केन्द्रीय उत्पाद-शुल्कों से मुक्त हैं।

108. पी० शी० मी० रेजिनों से बनी पाइंटों से पानी से जाने से खेतों में पानी की खिलाई (सीपेज) और बरबादी कम हो सकती है और इसके फलस्वरूप सिक्काई की प्रभावीतापदकता धड़ सकती है। कुक्कि सिक्काई के लिए पी० शी० मी० पाइंटों का निर्माण करने के लिए मैं इस केन्द्रीय सामग्री को सस्ते दामों पर उपलब्ध कराना चाहता हूँ और इसके साथ ही यह भी आहता है कि इस विधायक का अन्य प्रयोजनों के लिए बुलंपयोग न किया जाए, इसलिए यह प्रस्ताव किया जाता है कि आजमाइशी तौर पर, इस प्रयोजन के लिए आयानित पी० शी० मी० रेजिनों को उस समय से सीमा-शुल्कों से मुक्त कर दिया जाए जब कि एक ऐसी योजना की कार्यप्रदलिया सेयार हो जाए, जिसमें उपर्युक्त दोनों उद्देश्यों की पूर्ति हो।

109. मैं श्रीपथियों (इंग) और दवाइयों (मेडिसिन) के खेत में दी जा रही राहत का भी जिक्र करूँगा। जीवन रक्षा करने वाली श्रीपथियों के निर्माण के लिए आवश्यक 22 विनिविष्ट थोक श्रीपथियों को पूर्णतः सीमा शुल्कों से मुक्त करने और 17 मध्यवर्ती विनिविष्ट थोक श्रीपथियों पर भूल्यानुसार 75 प्रतिशत सीमा-शुल्क को कम करके 25 प्रतिशत भूल्यानुसार करने का प्रस्ताव रखा जाता है। उत्पाद-शुल्क के खेत में, नेटेस्ट अवधा स्वामित्व वाली दवाइयों को, जिनमें जीवन रक्षा करने वाली श्रीपथियों शामिल हैं, विशेष उत्पाद-शुल्क से मुक्त करने का प्रस्ताव किया जाता है। कुल मिला कर इन उपायों के परिणामस्वरूप अनुमानतः प्रति बर्ष 7.04 करोड़ रुपये के राजस्व का नुकसान होगा।

110. अब मैं दूर्गामी प्रभाव डालने वाले एक प्रस्ताव की ओर आता हूँ। इसका संबंध अनिमित तम्बाकू से है जिस पर 1943 में उत्पाद-शुल्क लगता था रहा है। इस शुल्क के कारण उत्पाद-शुल्क तन्त्र अद्वितीय तम्बाकू उत्पादकों और लाइसेंसधारियों के सम्पर्क में आता है। तम्बाकू को सभी प्रकार के उत्पाद-शुल्कों से जिनमें अनिवार्य उत्पाद-शुल्क भी शामिल हैं, पूरी तरह मुक्त करने और इस प्रकार एक ही द्वारा मैं लगानी दस लाख तम्बाकू उत्पादकों, संसाधकों, (प्लोटर), छाटे व्यापारियों और योदाम लाइसेंसधारियों को उत्पाद-शुल्क के नियंत्रण से मुक्त करने का प्रस्ताव किया जाता है। मुझे इसमें कोई सवेह नहीं कि इस दुष्कारायी शुल्क को जो कि श्रीपनिवेशिक काल की विरासत के रूप में बला आ रहा है, समाप्त करने के नियंत्रण का हमारे देश के तम्बाकू उत्पादन वाले इलाकों के किसानों द्वारा व्यापक रूप से स्वागत किया जाएगा। इस

विधायक में 121.20 करोड़ रुपये के ग्रान्ति वी हार्डी जा० परन्तु, मैं हमारे से 115.71 करोड़ रुपये की जाति वां, निमित तम्बाकू के उत्पादों पर भूमिका रूप से शुल्क दरों को बढ़ा कर पूरा करने का प्रस्ताव करता हूँ।

111. मैं मिगरेटों पर भी बाद में जाता उठाऊंगा। इस समय मैं निमित तम्बाकू के अन्य उत्पादों की वर्ती करूँगा। जहाँ तक ब्रॉड वाली बीड़ियों का संबंध है, तम्बाकू के स्तर पर मौजूदा शुल्क, बीड़ी पर लगने वाले शुल्क के साथ मिल कर, प्रति हजार बीड़ियों पर लगभग 3 रुपए बैट्सा है, ब्रॉड वाली बीड़ियों पर लगभग 3.60 रुपए की समेकिन दर निश्चिन करने का प्रस्ताव किया जाता है। ब्रॉड वाली नवा विनाकारी बोनों विस्मों के बीड़ी निर्माताओं द्वारा निमित बिना ब्रॉड वाली बीड़ियों पर उनी वर्ष पर शुल्क लगेगा। इस गमय, बिना ब्रॉड वाली बीड़ियों शुल्क से मुक्त है लेकिन उन पर तम्बाकू के स्तर पर शुल्क लगता है जो प्रति हजार बीड़ियों पर लगभग नववे पेसे बैठता है। बिना ब्रॉड वाली अन्य बीड़ियों पर प्रति हजार 1.60 रुपए की दर से एक नामांक का समेकिन शुल्क लगाने का प्रस्ताव किया जाता है। परन्तु, बैथल बिना ब्रॉड वाली बीड़ियों के घोटे निर्माताओं की राहत देने के उद्देश्य से उन निर्माताओं को, जो केवल बिना ब्रॉड वाली बीड़ियों का उत्पादन करते हैं, एक बर्ण में प्रयत्न 60 लाख बीड़ियों की निकामी (क्लीयरेन्स) के संबंध में शुल्क की आदायगी से मुक्त करने का प्रस्ताव किया जाता है। मैं जनते वाली तम्बाकू, नमवार और धूमपान के मिश्रणों के शुल्क में समुचित बढ़िया करने का भी प्रस्ताव करता हूँ। यह भी प्रस्ताव किया जाता है कि ब्रॉड वाली निमित हुक्मों तम्बाकू पर शूल्यानुसार 20 प्रतिशत की दर से शुल्क लगाया जाए।

112. एक अन्तर्राष्ट्रीय उपाय के तौर पर, मैं धूमपान मिश्रणों और लिमिट हुक्मों तम्बाकू को छोड़ कर, शुल्कवत्त अनिमित तम्बाकू से अने उत्पादों के मामले में उत्पाद अवस्था में लगने वाले शुल्क में श्रेष्ठोचित राहत देने का प्रस्ताव करता हूँ।

113. सम्मानित भवस्यों की यात्र होगा कि श्री लक्ष्मीकान्त जा की अधिक्षता में नियुक्त अप्रस्तक कर जाने वाली निमिति ने जनवरी 1978 में अपनी रिपोर्ट का हमरा भाग गेंग कर दिया था। समिति ने कुछ स्थूल सकेत दिए थे जिनके आधार पर उत्पाद शुल्क टैरिफ़ को दीघिविष तथा अल्पविष में युक्तियुक्त बनाने के लिए प्रयास किया जाना चाहिये। मैंने समिति की सिफारियों पर बारीकी तथा साधारणी से विचार किया है। साधनों की आवध्यकता तथा अन्य व्यावहारिक तथ्यों को ध्यान में रखते हुए उत्पाद-शुल्क 'टैरिफ़' में अधिक फेर-बदल करना संभव नहीं है। इसके अलांकार, इस बात की भी आरंभिक है कि उत्पाद-शुल्क की मौजूदा प्रणाली में ज्ञाता परिवर्तन कर देने से उत्पादन के विनाकारी क्षेत्रों के बीच संतुलन बिहारी सकता है। तथापि समिति की सिफारियों को कार्यान्वयित करने की एक कार्रवाई के रूप में मैंने बहुत-सी उपभोक्ता वस्तुओं तथा सेयार उत्पादों पर लगने वाले 'अशुल्क' की दांचे में फेर-बदल करने का प्रयास किया है।

114. मैं शुल्क में ही यह बहा दूँ कि इस फेर-बदल के फलस्वरूप, इस समय जिन वस्तुओं के संबंध में उत्पाद-शुल्क में परिवर्तन किया गया है उन पर उत्पाद-शुल्कों की प्रभावी दरों की संख्या को 28 से बढ़ा कर 16 कर दिया गया है। मैंने शुल्कों के दांचे में अधिक बढ़ियाँ लेता लाने के लिए भी इस अवधार का लाभ उठाया है और बिलास की तथा अधिक्षित की कहीं-कहीं बढ़ियों पर शुल्कों में बढ़िया की है। उत्पाद-शुल्क सौरीय और प्रसाधन सामग्री (सुर्गकान्त तेलों का ईड़िकर) पर 63 प्रतिशत से बढ़ा कर 100 प्रतिशत बानानुकलनों (एयरफॉडीज़मर) पर 105 प्रतिशत से बढ़ाकर 110 प्रतिशत, प्रणालीन तथा बानानुकलन यन्त्रों (रेफिजरेटिंग एंड एयरकॉंडीशनिंग मशीनरी) के पूजौं पर 105 प्रतिशत से बढ़ाकर 125 प्रतिशत, रेटारियो और हाई-फाई उपस्थित पर 36.75 प्रतिशत से बढ़ा कर 40 प्रतिशत, अपेक्षाकृत अधिक भीमती ट्रेलिविजन

सेटों पर 21 प्रतिशत में बढ़ाकर 30 प्रतिशत, अधिक कीमती रेडियो तथा रेडियोट्रायम पर 36.75 प्रतिशत में बढ़ाकर 40 प्रतिशत किया जा रहा है। मैंने इंटेक्टोनिक उत्पादों के संबंध में, मृत्यानुसार शुल्क की 15 प्रतिशत की विस्तृती दर को कायम रखा है जहाँ लघु एकों के लिए ऐसी विस्तृती वर लगती थी।

115. मैंने छिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं पर लगने वाली शुल्क दरों में यथोचित वृद्धि करने के लिए भी इस अवसर का उपयोग किया है; इसके पीछे मेरी यही धारणा रही है कि इन वस्तुओं पर अधिकतर अन्तर्वर्ती किस्म का खर्च होता है और शुल्क का भार भी काफी वस्त्री अवश्य में फैल जाता है। इस श्रेणी में उत्पादशुल्क प्रेशर-कुररों पर 10.5 प्रतिशत में बढ़ा कर 15 प्रतिशत, इस्पात के फर्नीचर पर 21 प्रतिशत से बढ़ा कर 25 प्रतिशत, घरेलू बिजली के उपकरणों पर 26.25 प्रतिशत से बढ़ा कर 30 प्रतिशत और सेफों तथा स्ट्रोग बम्पों पर 21 प्रतिशत से बढ़ा कर 35 प्रतिशत कर देने का प्रस्ताव किया जाता है।

116. मैंने मावृत दूध पेस्ट, दूध घुण और डिटजेट जैसी कुछ उपभोक्ता वस्तुओं को भी इनके शुल्कों में वृद्धि करने के उद्देश्य से बुना है और इसके साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा है कि विकेन्ट्रीफूल थोक में लघु एकों द्वारा उत्पादित वस्तुओं पर इस वृद्धि का कोई बुरा असर न पड़े। उत्पादशुल्क घरेलू और लांडी मावृत पर 5.25 प्रतिशत से बढ़ा कर 20 प्रतिशत, कम कीमती टायेन्ट मावृत पर 10.5 प्रतिशत से बढ़ा कर 15 प्रतिशत अधिक कीमती मावृत पर 15.75 प्रतिशत गे वड़ कर 20 प्रतिशत डिटजेटों पर 13.13 प्रतिशत से बढ़ा कर 20 प्रतिशत तथा दूध पेस्टों पर 10.5 प्रतिशत से बढ़ा कर 25 प्रतिशत हो जाएगा। दूध ब्रूसों पर भी 25 प्रतिशत की दर पर शुल्क लगाने का प्रस्ताव किया जाता है। मैं यहाँ साफ-साफ बता दूँ कि इन वस्तुओं पर उत्पाद-शुल्कों की दरों में वृद्धि करने का आंशिक उद्देश्य इस बात का सुनिश्चय करना है कि लघु निर्माण जिन्हें कर में छूट का लाभ प्राप्त है, इन वस्तुओं के बाजार में अपने हिस्मे को बढ़ा सके।

117. जहाँ तक खाद्य वस्तुओं का सम्बन्ध है, मैंने आम जनता के उपभोग की वस्तुओं, जैसे खाद्य नैंगों और बनस्पती पर कोई और बोझ नहीं डाला है। बास्तव में मैंने बनस्पती की विशेष उत्पादनशुल्क से मुक्त करके इस पर लगने वाले शुल्क की कम किया है। परन्तु मैंने तैयार अवधार परिवर्तित खाद्य पदार्थों इन्स्टेट, कॉफी, बिस्टुटी, संभासित पर्सीर, कॉको पाउडर, चूड़ीग गम और चाकेट जैसी वस्तुओं की, समाज में उनके उपभोक्ताओं के दरों की ध्यान में रखने हुए, उन पर शुल्क बढ़ाने के लिए उत्पादन भवसा है। इस प्रकार उत्पादन शुल्क इन्स्टेट कॉफी पर 21 प्रतिशत से बढ़ा कर 25 प्रतिशत तैयार अवधार परिवर्तित खाद्य पदार्थों बिस्टुटी तथा संभासित पर्सीर पर 10.5 प्रतिशत से बढ़ा कर 15 प्रतिशत अधिक कॉको पाउडर, चूड़ीग गम और चाकेटों पर 10.5 प्रतिशत से बढ़ा कर 20 प्रतिशत कर दिया गया है। बातिन जल (एयरेटर वाटर) के मामले में सांदे सोइं पर शुल्क को 15.75 प्रतिशत से बढ़ा कर 20 प्रतिशत करने का प्रस्ताव किया जाता है। अन्य बातिन जलों के मामले में दो तरह की शुल्क वर्ते लागू किए जाने का प्रस्ताव है—एक जो 60 प्रतिशत की दर उन जलों के लिए जिनमें कैफीन हो और दूसरी 30 प्रतिशत की दर उन जलों के लिए जिनमें कैफीन न हो। मैं यह भी प्रस्ताव करता हूँ कि इस समय किसी एक विस्तृत वर्ष में प्रथम 50 लाख बोतलों की निकासी के सम्बन्ध में जो भौगोला रियायती वर सागृ होती है उसे बाप्तम ले लिया जाए। किन्तु लक्ष निर्माणों के हक में वातिन जलों में मौगुदा छूट मिलनी रहेगी।

118. उपभोक्ता वस्तुओं पर शुल्क दरों का पुनर्निधारण करने में मैंने कई वस्तुओं को विशेष उत्पादनशुल्क से मुक्त कर के उन पर शुल्क के भार की कम कर दिया है। मैं इस सम्बन्ध में खाद्य नैंग पर फ्लोरेंसन्ट लाइटिंग ट्रूवों का उल्लेख करना चाहता हूँ कि इस अवधितर उपयोग

संक्षो-गवियों में रोगनी की व्यवस्था करने के लिए किया जाना है और उनमें शिजली की खपत कम करने में सहायता मिलेगी, उन पर लगने वाले शुल्क को 42 प्रतिशत से घटा कर 30 प्रतिशत कर दिया गया है। प्रस्ताव है कि इस समय 5% प्रति जोड़ा तक के भूत्य के कम कीमती जूते चप्पल आदि पर उत्पादन शुल्क की जो छठ दी जाती है वह लग्ते 10 रुपए प्रति जोड़ा तक की कीमत के जूते चप्पल आदि पर भी दी जाए।

119. मैंने व्यक्तिगत परिवहन साधनों पर लगने वाले शुल्क की दरों को भी युक्तिमंगल बना दिया है। मौसिंडो पर, जिन्हें अप्रेक्षाकृत कम भूमध्य नैंग इमेजेमाल करने हैं और जिनमें कम हैं धन खर्च होता है अब पहले से कम अर्थात् 10 प्रतिशत की दर से शुल्क लगेगा जबकि मोजूदा शुल्क लगभग 13.1 प्रतिशत है। स्कूटरों, भोटर-माइक्सों तथा तोन परियों वाले स्कूटरों पर 20 प्रतिशत की दर से शुल्क लगेगा, जबकि इन पर इस समय 13.13 प्रतिशत की दर से शुल्क लगता है, तथा कारों पर 25 प्रतिशत की दर से शुल्क भवा करना होगा, जबकि शुल्क की भीजूदा दर 18.38 प्रतिशत है। डैकसी के तीर पर खालाई जाने वाली कारों पर नशा औंटा रिक्षाओं पर लगने वाले शुल्क की 10 प्रतिशत की रियायती दर को बढ़ाकर 15 प्रतिशत कर दिया जाएगा। शुल्कों को युक्तिमंगल बनाने की इस योजना के अंग के रूप में व्याणियक गाड़ियों (कमणियल बेहिकल्म) की दर में भी मामूली वृद्धि होगी, अर्थात् उने 13.1 प्रतिशत से बढ़ा कर 15 प्रतिशत कर दिया जाएगा।

120. जहाँ तक निमित्त निवेश वस्तुओं (हन्गृट) का सम्बन्ध है, मैंने अपने ग्रापको, उनके उपयोग तथा सापेक्षिक महत्व को ध्यान में रखते हुए, भुज्य स्पूप से मौगुदा दरों के डॉबि को सुधारने तक ही सीमित रखा है। इन परिवर्तनों का व्यौरा बजट-पत्रों में दिया गया है।

121. अप्रत्यक्ष कराधान जांच समिति ने कराधान में सुधार करने का जो दूसरा सुझाव दिया है, वह यह है कि तैयार उत्पादों के निर्माण में इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं पर लगने वाले शुल्क के सम्बन्ध में भी प्रोफार्मार्ग जमा की मुद्रिताएं (प्रोफार्मा श्रेइट फैसिलिटी) दी जाए। इस समय ये मुद्रिताएं एक सीमित क्षेत्र में ही दी जा रही हैं। इन मुद्रिताओं का और ज्यादा विस्तार करने से, जैसा कि समिति ने मुझाव दिया है, राजस्व सम्बन्धी बड़ी उत्पादने पैदा हो जाएंगी और इसके अनावा तरम्भन्धी कार्य-प्रणालियों को बढ़ाने का अतिरिक्त प्रशासनिक बोझ भी उठाना पड़ेगा। किन्तु श्रीदीपिक क्षेत्र का यह आश्रह है कि हम उपाय का आजमाया जाए, इसनिए मैं प्रयोगात्मक रूप में, प्रोफार्मार्ग जमा की गुविन्दा की वस्था को इंजीनियर उत्पादन के लिए करना है कि इस उपाय का आजमाया जाए, इसनिए मैं प्रयोगात्मक रूप में, प्रोफार्मार्ग जमा की गुविन्दा की वस्था को इंजीनियर उत्पादन के लिए करना है कि इस उपाय का प्रस्ताव करना है, जिनके निर्माण में इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं पर लगने वाले शुल्क का भार स्पष्ट है गंसा करने समय, मैंने अंतिम रूप से तैयार कुछ उत्पादों के शुल्कों में भी वृद्धि करने का प्रस्ताव किया है। इन परिवर्तनों का व्यौरा बजट-पत्रों में उपलब्ध है।

122. केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क टैरिफ के हाँचे के पुनर्व्यवस्थापन से मंबंधित प्रस्तावों को नामू करने तथा कुछ प्रभावित मरों में थोड़े परिवर्तन करने से, एक दूर वर्ष में लगभग 100 करोड़ रुपए के निवाल राजस्व की प्राप्ति होगी।

123. अब मैं साधन जुटाने के ठोम प्रस्तावों का उल्लेख करूँगा।

124. उत्पाद-शुल्कों के क्षेत्र में, सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण प्रस्ताव पेटोनि भूम के कुछ एक मुख्य उत्पादों से संबंधित हैं। सम्मानित नदस्य जो है कि नेल तथा पेटोलियम नियायिक देशों ने कृच्चे तेल की कीमत में वृद्धि करने के एक भरणगढ़ कार्यक्रम की घोषणा की है। अभी तक भी हड़प काफी ज्यादा हव तक कृच्चे तेल के आयात पर निर्भर रहते हैं, और एक्सेल की भीमतों में वृद्धि हो जाने के परिणामस्वरूप विदेशी मुद्रा के खर्च में काफी ज्यादा वृद्धि होने की संभावना है। वर्ष 1973

में कच्चे तेल की भीमतों में जो बहुत ज्यादा वृद्धि हुई थी, उसके कारण शुल्क-शुल्क में तो पेट्रोलियम के उत्पादों की खपत में कमी हुई, जिन्हें किंवा खपत में फाँफी ज्यादा वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई दी है। ऊर्जा सम्बन्धी एक ऐसी सशक्त नीति का विकास करने की वृद्धि से, जिसके अनुसरण में हमारे विदेशी मुद्रा के साथनों पर कम से कम दबाव पड़े, मैं निस्सदैह यही समस्ता हूँ कि ज्यादा महत्वपूर्ण पेट्रोलियम उत्पादों की खपत पर अंकुश लगाना बहुत जल्दी है। इही महत्वपूर्ण उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने राजस्व प्रस्तावों को संग्राह किया है।

125. प्रस्ताव है कि भोटर स्पिरिट पर लगने वाले केन्द्रीय डब्ल्यू.एसुल्क को, जो इस समय 2253.88 रु. प्रति किलोमीटर है बढ़ा कर 2750.00 रु. प्रति किलोमीटर कर दिया जाए। अंकि पेट्रोल की धनिकतर खपत समाज के ऊपरी वर्गों के लोग ही करते हैं, इसलिए इस वृद्धि के लिए मुझे कोई अफसोस नहीं है। मैं यह प्रस्ताव भी करता हूँ कि हाई-स्पीड ऑडिल तेल के शुल्क को, जो इस समय 404.04 रु. प्रति किलोलिटर है, बढ़ाकर 500 रु. प्रति किलोलिटर कर दिया जाए क्योंकि इसकी खपत में बड़ी तेजी से वृद्धि हुई है।

126. जैसा कि सम्मानित सदस्य जानते हैं पहले हाई स्पीड ऑडिल तेल में मिट्टी के तेल (केरोसीन) की मिलावट की आती थी वर्षाएँ मिट्टी के तेल की कीमत कम थी। विलास कुछ वर्षों से हमारा प्रयास यही रहा है कि इस प्रवृत्ति को यथासंभव इन दोनों उत्पादों के शुल्कों की दरों में समानता रखकर, रोका जाए। इसके प्रालया हमें भी हाल ही में मिट्टी के तेल का आयात करके ही काम खलाना पड़ा है। इन सभी आतों को ध्यान में रखते हुए मैं प्रस्ताव करता हूँ कि मिट्टी के तेल के शुल्क को जो इस समय 408.18 रु. प्रति किलोलिटर है बढ़ाकर 500 रु. प्रति किलोलिटर कर दिया जाए। मैं यह प्रस्ताव भी करता हूँ कि इसके साथ-साथ, लिकिवफाइल पेट्रोलियम गैस के शुल्क की दर को भी, जिसे नुच्छ रूप से गहरी तथा अर्व-शहरी इलाकों में खाना पकाने के काम में इस्तेमाल किया जाता है, 262.50 रु. प्रति मेट्रिक टन के मीजूदा स्तर बढ़ाकर 400 रूपए प्रति मेट्रिक टन कर दिया जाए।

127. पेट्रोलियम के उत्पादों से संबंधित भेरे प्रस्तावों से केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क के अन्तर्गत 223.25 करोड़ रु. तथा सीमा शुल्क के अन्तर्गत 55.7 करोड़ रु. के अतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति होने का अनुमान है।

128. इसके बाद, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क टैरिफ की अवधिपृष्ठ प्रीपर्म भव 68 पर शुल्क की दर को 5 प्रतिशत के वर्तमान स्तर से बढ़ा कर 8 प्रतिशत मूल्यानुसार करने का प्रस्ताव है। इससे 100 करोड़ रूपए के अतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति होगी। जैसा कि सम्मानित सदस्यों को मासूम है, मद 68 के अन्तर्गत आने वाली उन वस्तुओं पर अक्ष किए गए शुल्क को मुक्तर करने की व्यवस्था पहले से ही मार्जित है जो कि ऐसी दूसरी वस्तुओं के नियन्त्रण करने के भास में आती है जिन पर उत्पाद शुल्क लगाया जा सकता है। इसलिए वह हां इस शुल्क का कोई खास वृद्धि-स्थानिक प्रभाव पड़ने की आशंका नहीं है।

129. जैसा कि सदन को विवित है, मद 68 में दर्ज वस्तुओं का उत्पादन करने वाले उन सभी लघु नियमान्त्रिमों को, जिनकी उत्पाद शुल्क योग्य वस्तुओं की निकासी पूर्ववर्ती वर्ष में 30 लाख रुपए से ज्यादा की नहीं थी, इस समय 30 लाख रुपए के मूल्य तक की पहली निकासियों पर देय शुल्क से कूट मिलती है। इस आपाय के अध्यावेदन बराबर प्राप्त होने रहे हैं कि किसी भी लघु एकाकी रियायत की पालना का आकालम करने के लिए मद 68 से भिन्न अल्प मर्दों में दर्ज वस्तुओं के मूल्य को शामिल नहीं किया जाना चाहिए। ऐसी मांग भी की जाती रही है कि नियांत्रित की निकासियों की भी शामिल न किया जाए ताकि सभु उद्योग क्षेत्र के एकाकी को नियांत्रित बदाने के कार्य में प्रोत्साहन मिलता रहे। मैं इन मर्दों के अधिकाय को स्वीकार करता हूँ। इन मर्दों को तथा मद

68 के अन्तर्गत शुल्क में की जाने वाली प्रस्तावित टाई को ध्यान में रखने हैं, मैं कूट किए जाने की मीजूदा योजना को युक्तिमंगल बनाने का प्रस्ताव करता हूँ। संशोधित योजना के अनुसार जो कि पहली अप्रैल 1979 से लागू होगी उन सभी लघु नियमान्त्रिमों को जिनकी मद 68 की वस्तुओं की, आन्तरिक उपयोग के लिए निकासी पूर्ववर्ती व्यापार में 30 लाख रुपए के मूल्य से ज्यादा की नहीं थी 15 लाख रुपए तक के मूल्य की उनकी पहली निकासी पर मद 66 के अन्तर्गत लगने वाले शुल्क से पुरी कूट मिलेगी और 15 लाख रुपए से लेकर 30 लाख रुपए तक की निकासियों पर उनको 4 प्रतिशत की दर से शुल्क देना होगा जो कि इस मद के किए प्रस्तावित शुल्क की दर से आधी है।

130. जैसा कि सम्मानित सदस्य जानते हैं, चूने हुए उद्योगों में उत्पादन की वृद्धि को प्रोसारण देने के लिए सेतुबंध शुल्क से कूट देने की जिस योजना की घोषणा 1976 में की गई थी वह 31-3-1979 को रामापात्र होने वाली है। मैं हर योजना को इस तारीख से प्राप्त जारी रखना नहीं चाहता। इस योजना की गमाप्ति से 40 करोड़ रुपए का अतिरिक्त राजस्व प्राप्त होने की आशा है।

131. भेने वाले अवसर पा साम उठाकर वस्तु-स्वीकार विद्यमान धनिकूलनाओं की आवश्यकता की है और मैं याहता हूँ कि उनमें से कुछ को मंशोधित कर दिया जाए या वापस ले दिया जाए। इनहा ड्यूरा बजट-नावों में उपलब्ध होंगा।

132. अतिरिक्त राधन खोज निकाजने की अपनी कोशिश में, मुझे आवश्यकतावापास, पुरानी बफादार सिगरेट का ही भहारा लेना पड़े रहा है। मैंने पहले ही अतिरिक्त ग्रवरस्था में तमाकू पर लगाने वाले शुल्क को वापस देने के प्रस्ताव का उल्लेख किया है, जिनका बोझ सिगरेटों पर पड़ता है। लेकिन अब मैं सिगरेटों की शुल्क-इरों के छाँचे में इस तरह से मामां-योजन करना चाहता हूँ कि जिससे कि इस मद से 60 करोड़ रुपए की अतिरिक्त रकम और प्राप्त हो सके। इस उपाय से प्राप्तिशत राजस्व को हिसाब में लेते हुए तथा नियमित तमाकू के उत्पादों पर लगाने वाले शुल्क की दरों के छाँचे को नया रूप देने से जिनका उल्लेख मैंने पहले किया है, विसी कर के बदले अतिरिक्त उत्पाद शुल्क के राज्यों के हिस्से में एक वर्ष 18.31 करोड़ रुपए की वृद्धि होगी।

133. जैसा कि सम्मानित सदस्य जानते हैं, उत्पाद-शुल्कीय व्यवस्था को यस्तपूर्वक इस प्रकार से इस्तेमाल की जाया गया है जिससे कि गैर-मर्दीनां थेट्र में वियासलाइटों के उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए। मैंने गैर-मर्दीनां क्षेत्र द्वारा ग्राना जाने वाली दिवामनाइटों के शुल्क को, जोकी इस समय 50 रुपए की एक गुणी पर 4.83 रुपए के हिसाब से लिया जाता है, बढ़ाकर 9.20 रुपए कर देने का प्रस्ताव रखकर इसी प्रक्रिया को और आगे बढ़ावा चाहना चाहूँ। मैं यह प्रमाण भी करता हूँ कि कुटीर एकाकी से भिन्न, गैर-मर्दीनां क्षेत्र पर नायू शुल्क की वर्तमान दर का, जो कि 4.52 रुपए है, पूर्णांकित कर के 4.50 रुपए कर दिया जाए। जहां तक कुटीर क्षेत्र के उद्योगों का सम्बन्ध है, प्रस्ताव है कि उन पर नायू शुल्क की दर को 3.36 रुपए से घटाकर 1.60 रुपए कर दिया जाए। मुझे पूरा विश्वास है कि इन सभी उद्योगों से गैर-मर्दीनां क्षेत्र में आमतौर से और कुटीर उद्योगों में वास तौर से उत्पादन की वृद्धि और भी तेज रखाकर से होगी। आशा है कि एक वर्ष में, इन उपाय से 8 करोड़ रुपए के प्रतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति होगी।

134. कुछ एक संगठित एकाकी में मर्दीनां में जो कालीन बनाए जाते हैं उनका उपभोग एक विशिष्ट वर्ग के लोगों तक ही सीमित है। मैं इस क्षेत्र के उत्पादन को बढ़ावा देने का कोई औचित्य नहीं समझता जबकि हमारे यहां पर बड़ी नादाद में कालीन बुनाए वाने परम्परागत कारीगर गैर-मर्दी हैं जिनके कौशल को अन्तर्राष्ट्रीय क्षात्रि प्राप्त है। इसनिए मैं नहीं चाहता कि मर्दीनी कालीनों के उत्पादन में वृद्धि करके इस शुल्करों

की आंतरिकिया को खतरे में छाना जाए। हमलिए में प्रस्ताव करता है कि हम प्रकार के मणिनी से बने कालीनों पर 30 प्रतिशत की दर में शुल्क लगा दिया जाए। इस से बने कालीनों को हम शुल्क में पूर्णतया मुक्त रखा जाएगा। हम प्रस्ताव से अनुमानतः 1.4 करोड़ रुपए के अनिवार्य राजस्व की प्राप्ति होगी।

135. जार्यूक उद्देश्य के शूल्क और सूनी कपड़ा तैयार करने वाले अधि-प्रशान्त दोषी को, जिसमें विजिनी का प्रयोग नहीं होता, बद्दला देने के लिए प्रस्ताव है कि बिना किसी के उन सूनी के लिए (वर्तों) पर जी पावर से चलाए जाने वाले करघों पर तैयार किए जाने हैं, उनमें वाले मूल्यानुमार शुल्क की 8 प्रतिशत को रियायती दर को छटा दिया जाए, ताकि इस प्रशान्त के फैक्ट्रिकों पर मूल्यानुमार 12 प्रतिशत की उसी दर में शुल्क लगे जिनमा कि दूसरे पावर से तैयार किए जाने वाले के लिए पर लगता है।

136. यह भरकार ईड्यूम (शृंखलाघात) क्षेत्र को प्रोत्तालन देने के लिए बचतशब्द है। पायरलूम तथा मिथिन मिनों द्वारा उत्पादित फैक्ट्रिक के मुकाबले में ईड्यूम से बने फैक्ट्रिक की प्रतियोगी क्षमता में और ज्यादा मुधार करने की ज़रूरत है। हमलिए प्रस्ताव है कि कपास तथा मेशुलांज के आंतरिक बढ़े आगे के उत्पाद शुल्क में, जिसका इन्हेमाल मिथिन सूनी कपड़ा विलों तथा पावरलूमों द्वारा किया जाना है, सौजन्य दरों के लगभग 10 प्रतिशत की ओर बढ़ि कर दी जाए। इन परिवर्तनों का अद्यौग बजट पद्धों में दिया गया है। इन उपायों से लगभग 10 करोड़ रुपए के अनिवार्य राजस्व की प्राप्ति होने का अनुमान है।

137. 1978 के बजट में जो विशेष उत्पाद-शुल्क लगाए गए थे वे 31-3-1979 को समाप्त होने जा रहे हैं। प्रस्ताव है कि हम शुल्कों को प्रभावी बुनियादी शुल्कों के 1/20 के मात्र की वृत्तमाल दर पर एक वर्ष आगे तक जारी रख जाए। किन्तु इस शुल्क से उन मदों को मुक्त रखने का प्रस्ताव है, जिनके सम्बन्ध में शुल्क दरों को पुनः निर्धारित कर दिया गया है और नए शुल्क लगाए गए हैं। विजिनी, कोयले तथा मद 68 की वस्तुओं पर इस समय जो छूट दी जा रही है उसे आगे भी जारी रखा जाएगा।

138. अब मैं सीमा-शुल्कों से सम्बन्धित प्रस्तावों का निपुण कहना। इनमें से सबसे ज्यादा महान्पूर्ण प्रस्ताव उन वभी आयातित वस्तुओं पर लगने वाले प्रतिसंतुलनकारी सीमाशुल्क की सौजन्य छूट को समाप्त करने से सम्बन्ध रखता है जो कि केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क टैरिफर्की मद 68 के प्रत्यारोपण वर्गीकृत है। जब 1975 में उस टैरिफ में इस अवधिकार सब को दर्ज किया गया था, तब आयातित वस्तुओं को तदनुशृण्प प्रतिसंतुलनकारी सीमा-शुल्क से छूट प्राप्त थी। यह छूट, जो शुल्क में उम समय द्वी गई थी अबकि देशी वस्तुओं को । प्रतिशत मूल्यानुमार उत्पाद-शुल्क लगता था अब तक बराबर जारी रखी गई, हालाकि दर को उत्तरीतर 5 प्रतिशत तक बढ़ा दिया गया है। जैसा कि मैंने पहले बताया है, मैंने मद 68 के प्रत्यारोपण केन्द्रीय उत्पाद शुल्क को 5 प्रतिशत मूल्यानुमार में बढ़ाकर 8 प्रतिशत मूल्यानुमार कर देने का प्रस्ताव किया है। इस मदर्भ में तथा मद 68 में वर्गीकृत देशी वस्तुओं को मंरक्षण देने के उद्देश से प्रस्ताव है कि आयातित वस्तुओं के सम्बन्ध में भी जो जा रही सौजन्य छूट को समाप्त कर दिया जाए। किन्तु इस छूट को समाप्त करने का प्रस्ताव रखकर मैंने परियोजना सम्बन्धी आयात के शुल्क में तथा मर्शिनरी की उन मदों के शुल्क में भी कोई परिवर्तन करने का प्रस्ताव नहीं रखा है जिनके सीमा शुल्क की अभी हाल ही में घटाकर मूल्यानुमार 25 प्रतिशत इस आधार पर कर दिया गया था कि ऐसी मर्शिनरी का उत्पादन देश में मही होता। इस उपाय से प्रतिसंतुलनकारी शुल्क के रूप में 96 करोड़ रुपए के अनिवार्य राजस्व की प्राप्ति होगी।

139. खाद्य तंत्रों की पुनि शक्ति उनकी मात्र में ज्यादा अनेक होने के कारण पहले इन तंत्रों का भारी मात्रा में आप्राप्त किया गया

था और आयात का मिलमिला अब भी जारी है। तेलहनों के देशी उत्पादकों को उनकी उपज की लाभकारी वित्त दिवाने की मुनिपिचल अवस्था करने के लिए प्रस्ताव है कि ताड़ के तेल, रेपसीड के तेल, सोयावीन के तेल, मूरजमूर्खी के तेल तथा पामौलिन के तेल पर 12 $\frac{1}{2}$ प्रतिशत मूल्यानुमार की दर से सीमा-शुल्क लगा दिया जाए। किन्तु उनको सहायत तथा प्रतिसंतुलनकारी शुल्कों में छूट मिलेगी। आणा है कि इस प्रस्ताव से 33.5 करोड़ रुपए के अनिवार्य राजस्व की प्राप्ति होगी।

140. प्रस्ताव है कि अपर्याप्त विलों वर्ष में सहायत सीमा-शुल्कों पर मौजूदा दरों पर ही जारी रखा जाए।

141. केन्द्रीय उत्पाद-शुल्कों तथा सीमा-शुल्कों से सम्बन्धित भेरे प्रस्तावों में कुल मिलाकर एक पूरे आर्थ 606.14 करोड़ रुपए के निवाल राजस्व की प्राप्ति होगी जिसमें से 413.15 करोड़ रुपये की गशि केन्द्र को अर्थ 192.99 करोड़ रुपए की राशि राजस्व को प्राप्त होगी।

142. तिन मासियों में परिवर्तन अधिसूचनाओं के द्वारा किए जाएंगे जो कि पहली मार्च 1979 से लागू होंगे, उन मासियों में ऐसी अधिसूचनाओं की प्रतियां ठीक समय पर भवा पटव पर रख दी जाएंगी।

143. सम्मानित मदस्यों को माल्म है कि प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा के सम्बन्ध में, जिसकी प्रदायारी भारतीय सुदूर में की जानी है, याकियों से विवेष यात्रा कर भी बशुल किया जाता है। इस कर की प्रणालन व्यवस्था को सर्वत तथा हस्त कर के अपर्वंचन की संभावनाओं को समाप्त करने के लिए इस योजना की संरोधित करते हुए, मूल्यानुमार शुल्क के स्थान पर मात्रानुगाम शुल्क लगाए जाने का प्रस्ताव करता हूए। नई व्यवस्था को, तत्त्वान्वन्धी कानून बनाए जाने के बाद गधासभव योग्य लागू कर दिया जाएगा। राजस्व प्राप्ति की दृष्टि से इस प्रस्ताव का कोई खास महत्व नहीं है।

144. अब भुजे कुछ अवृद्ध प्रपत्ते मित्र संचार-मंत्री महोदय की ओर में भी कहते हैं कि सम्मानित मदस्यों को माल्म है, हमारी बहुत सी डाक सेवाओं की इकाई लागत (युनिट कौस्ट) उनसे प्राप्त होने वाले राजस्व से ज्यादा बैठती है। इसके अलाया दूर-संचार सेवाओं के आधुनिकीकरण पर बहुत ज्यादा पूरी का निवेश करना पड़ता है। इन बातों को देखते हुए यह जल्दी माल्म होता है कि डाक तथा दूर-संचार की शुल्क-दरों में बढ़ि की जाए। बजट पद्धों के साथ ही एक आपन परिचालित किया जा रहा है जिसमें प्रस्तावित शुल्क दरों को दिल्लाया गया है। पश्चकाई (अन्तर्रेशीय गत) तथा पवर पर पांच पैसे ज्यादा बढ़च करने पड़े गे। किन्तु पोस्टनाई की कीमत में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। जहा तक दूर-संचार की शुल्क-दरों का सम्बन्ध है, 8 शब्दों के साधारण लाग पर 2.25 रुपये लगेंगे जबकि इस गमय इस पर 2.00 रुपया लगते हैं और प्रत्येक शब्द पर 30 पैसे देने पड़ेंगे जबकि इस गमय 25 पैसे देने पड़ते हैं। किन्तु प्रेस टेलीग्राम की दर जो की दरों प्रतिरिवर्तिस रहेगी। प्रति निमाई 1750 "कालों" से ऊपर स्थानीय "काल" प्रभार 40 पैसे प्रति "काल" के हिमाव से लिए जाएंगे, जबकि हम गमय, यह प्रभार 30 पैसे प्रति "काल" के हिमाव से लिए जाते हैं। जो और खोरा आपन में दिया गया है, उसका उल्लेख में यहां नहीं कहला। शुल्क दरों की इन वृद्धियों में, जिनको विस विधेयक के पारित होने के परिवार भरकार द्वारा आधिसूचित तारीख से लाए किया जाएगा, अनुमानतः प्रतिवर्ष 57.96 करोड़ रुपए के अनिवार्य राजस्व होगी। 1979-80 में 48.30 करोड़ रुपए का राजस्व प्राप्त होने का अनुमान है और इसे डाक तथा नार विभाग के आन्तरिक सामग्री के अनुमानों में शामिल कर लिया गया है।

145. हमारे कर-प्रधानमें लगभग 665 करोड़ रुपए की प्राप्ति होगी जिसमें से 205 करोड़ रुपए की रकम राज्यों को मिलेगी और

बाबी 460 करोड़ रुपए केन्द्र के पास रह गए। आय करना वालों से अनिवार्य निवेप के अन्तर्गत प्राप्त 160 करोड़ रुपए की प्राप्ति को हिमाचल में देने के बाद भी, 1355 करोड़ रुपए का घाटा जैप रहेगा जिसे मैं पूरा किए जिना ही छाड़ने का प्रस्ताव करता हूँ। इनमें से घाटे से उत्पत्ति होने वाली मुश्तक्काति के संभावित प्रकार का भद्रता भी मैंने भलीभांति लगा दिया है। बालू वर्ग के बड़े हुए खाद्य उत्पादन गे हमारे खाद्याल तथा अन्य वस्तुओं के विशाल भण्डारों से विदेशी मुद्रा प्राप्ति का निधि में उत्पन्न विपुल धन-ग्राहि से तथा पूर्ति की मौजूदा मुख्यवस्था और निर्बंधनकारी मीट्रिक नीतियों को आगे जारी रखने के निर्णय में भेरे अन्वर यह विषयास उत्पत्ति होता है कि हम लोग आगामी वर्ष में भी उचित सीमा तक कीमतों में स्थिरता बनाए रख सकेंगे।

146. हमके साथ ही मैं अपनी अम-माधवा की समाजित पर आपूर्ति है। मैंने इस बजट में कृषि तथा ग्रामीण विकास और अम प्रधान उत्पाद-धन्धों के विकास पर ज्यादा में ज्यादा जोर देने की कोशिश की है, क्योंकि अब मधीं हम बास को स्वीकार करते हैं कि केवल इसी एक सरीके से हम अपने देश में गरीबी और बेरोजगारी को दूर कर सकते हैं। किन्तु मैंने इस प्रक्रिया में बड़े उद्घोगों तथा आधारभूत मुश्तियों की अपर्हेता नहीं की है। इसके विरासत, मैंने उनको स्पष्ट प्रोत्याहृत दिया है। किन्तु मुझे उन उद्घोगों में कोई सम्भान्न नहीं है जो कि अन्यानों की जरूरतों को पूरा करते हैं। ऐसे उत्पादन के लिए हमारे पास कोई जगह नहीं है जो ग्रामीणों का जरूरतों का पूरा करना ही और जो हम प्रकार हमारे गमाज में विद्यमान विषयासों की मूर्त अभिभवित हो।

147. जिस सरल की गर्गवी हमारे देश में मौजूद है उसको एक-एक से दूर नहीं किया जा सकता। गरीबी दूर करने का काम एक लम्हों प्रक्रिया है जिस समाज में जहाँ कहीं में उत्पन्न अतिरिक्त माधवों को जुटाकर, उनका बड़े पैमाने पर निवेश करके, बेहतर संगठन स्थापित करके और समूचित जान का विकास करके उगे समूचे देश में कृषि और सम्बद्ध व्यवसायों तथा ग्रामीण उद्घोगों में काम करने वाले लाभों छोटे व्यक्तियों तक पहुँचा कर पूरा किया जा सकता है। हमारा अंतिम उद्देश्य केवल गर्गवों के रहन-महन के स्तर को ऊचा उठाना ही नहीं है, बल्कि एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जिसके स्तर-पूर्वों के पास कलान्कोणत, माधवन, कल्पनाशक्ति और सर्वोपरि आशा हो। मैं तो यही समझता हूँ कि यह बजट इसी विश्वास में बढ़ाया गया एक छोटा-सा कदम है। किन्तु इसकी सफलता वास्तव में इस बात पर निर्भर करती है कि उद्देश्य की वालीनायता और उसे प्राप्त करने के लिए परिश्रम करने की आवश्यकता के बारे में राष्ट्रीय स्तर पर मतेष्य हो और समाज के यक्षिणाली एवं भाष्टन-भृष्ट वर्ग आवश्यकत्वात् और बलिदान करने के लिए राजी हो। मैं अपेक्षित बलिदान और मनैक्य करने के लिए इस मर्वन का सहयोग चाहता हूँ।

ए. सी० निवारी, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF FINANCE
Department of Economic Affairs
(Budget Division)
BUDGET 1979-80
SPEECH OF DEPUTY PRIME MINISTER
AND MINISTER OF FINANCE
[No. F. 18(85)-B(D)/78]

New Delhi, the 28th February, 1979

Sir,

I rise to present the Budget for the year 1979-80.

2. The Economic Survey for 1978-79 placed before the House a few days ago presents a detailed account of the trends in the economy for the current year. I shall therefore confine my observations to a few salient aspects of the

economic situation in the context of which the budget has been formulated.

3. The performance of the Indian economy during the current year is a matter for great satisfaction. Agricultural production has continued at a record level for the second year in succession. This achievement is not due entirely to favourable seasonal factors. The increased production is in good part also the result of increased availability of irrigation and fertilizer, use of improved seeds, increased research and extension activity and extended price support and procurement operations. It is also in a great measure due to the energy and toil of millions of farmers who have undertaken investment, absorbed new technology, adopted new cultural practices and contributed to the general good by growing two ears of corn in place of one.

4. So long as there is great poverty and unemployment in the country, particularly in the rural areas, and agriculture has the largest potential for generating employment, and providing purchasing power to the large majority of the people, there can be no let up in the task of agricultural improvement. Our objective should be to raise productivity further by using improved technology and more inputs. This requires larger investment, greater effort in a variety of ways and better organisation.

5. Industrial production is also expected to register an increase of 7 to 8 per cent in the current year. This is due to an improvement in the production of a large number of industries. In particular, the increase in production has been sharp in electricity generation, food industries, electricals and non-electrical machinery, metal products, textiles and transport equipment. The over-all supplies of basic materials like cement, fertilizer, steel and non-ferrous metals were augmented by sizeable imports so that shortages did not act as a constraint on domestic growth.

6. If this rate of agricultural and industrial growth is to be maintained in the coming year, supplies of basic goods should increase through larger investment. That is why the Government is pushing ahead with a large investment programme in irrigation, electricity generation, cement, steel, fertilizers and transport.

7. Price stability which this Government achieved last year has continued through the current years as well. The wholesale price index on 10th February, 1979 was only 0.9 per cent above the level a year earlier and 0.4 per cent above the level two years earlier. Such a record of price stability in a period in which national income growth was about 11 per cent would be difficult to find elsewhere in the world. This has been brought about by well conceived supply and demand management policies. The role of increased agricultural and industrial production and a liberalised import policy in vital areas needs to be underscored in this regard. Simultaneously, a monetary policy restricting the flow of credit for speculative activities in the economy and directing the credit towards productive sectors has been pursued.

8. An expanding investment programme needs an increasing volume of resources. But resource mobilisation does not seem to match requirements. Government finds that there is a tendency on the part of various sectors of the economy to look upon tax concessions as the only way of improving their sagging fortunes. It must be realised that if the resources needed for development are to be raised without inflation there will have to be a greater readiness on the part of people who can bear further taxation to shoulder additional burden.

9. Another instrument of resource mobilisation has also not yielded the results expected. The surpluses of public sector undertakings have in 1977-78 been significantly lower than anticipated. It looks as if the results may not be appreciably better in the current year as well. Considering that total investment in these enterprises is of the order of Rs. 12,800 crores, this is disappointing indeed.

10. Savings in the economy have to increase if a rising level of investment is to be financed in a non-inflationary way. This can be achieved, among other things, by cutting down wasteful expenditure whether in Government or in the private sector. Economy in Government expenditure can be brought about by restricting non-development expenditure, particularly such subsidies as do not serve any specific social or economic purpose. Private saving should be raised by a ruthless curbing of luxury expenditure and adoption of a more austere life

style in tune with our traditional values and the hard facts of our economic life.

11. Exports which had recorded dynamic growth in the three years prior to 1977-78, have actually shown a decline in the first eight months of the current year. This disturbing trend is due to a number of factors, including restrictions on some of our more dynamic items in importing countries, recessionary tendencies in the developed world and increased domestic demand for certain exportables. It is most essential that we reverse the declining trend in total exports by pursuing an active promotion policy.

12. In addition to stressing the promotion of exports of manufactured goods, we should not lose sight of the fact that as a large agricultural country there is need to pursue an active policy with regard to the promotion of exports of agricultural products. A policy which will increase exportable surpluses of such items as fruits, vegetables, certain types of vegetable oils, oil extractions and spices, needs to be pursued vigorously because it will not only raise the incomes of the farmers but also generate additional employment in the rural areas.

13. The rising level of imports shows that the process of utilisation of reserves for development has begun. In addition to imports of a consumer goods like edible oil, those of developmental goods like steel, cement, fertilizer, non-ferrous metals have increased substantially. Import policy has been liberalised and wherever necessary, import duties have been reduced or waived altogether in order to facilitate imports of capital goods, spare parts, components and raw materials and thus remove constraints on production and investment.

14. The rate of growth of the country's foreign exchange reserves has slackened in the current year. This is partly the result of the trends in exports and imports and the slowing down of the growth of invisible earnings. It does not look as if we can expect a continuous growth in these if account is taken of the various national and international developments. Therefore, though the level of our reserves is high at present, there is need to husband them carefully.

Revised Estimates for 1978-79

15. Let me take up the Revised Estimates for 1978-79.

16. On the expenditure side there have been a number of post-budget developments which cast additional burdens on the Centre in the current year.

17. As the Hon'ble Members are aware, some of the State Governments, had, in recent years, been persistently overdrawning in excess of their borrowing entitlements from the Reserve Bank. To enable the States to start with a clean slate and avoid overdrafts in future, we had decided to extend special loans to the States to clear their overdrafts as at the end of 1977-78. The payments on this account amount to Rs. 555 crores. Assistance to the States for gratuitous relief to people affected by natural calamities had to be increased to Rs. 40 crores from the original provision of Rs. 10 crores.

18. To give the farmers a higher return on their produce, the procurement prices of rice, wheat and coarse grains were increased during the year involving additional expenditure of about Rs. 42 crores. After allowing for certain arrears payments to the Food Corporation and larger receipts following an increase in issue price of wheat from December 1978, expenditure on food subsidy during the current year will be Rs. 114 crores more than the Budget Estimate of Rs. 456 crores.

19. Expenditure on export assistance will be Rs. 130 crores higher than the Budget provision of Rs. 251 crores due partly to substantial spill over claims of previous year. Loss on sugar exports of 6.5 lakhs tonnes in 1978 will be Rs. 23 crores more than the original provision of Rs. 10 crores.

20. Non-Plan assistance on a larger scale than what was anticipated at the Budget stage had to be provided to a number of public sector units which experienced financial difficulties. Coal India will be requiring assistance of Rs. 173 crores, against the provision of Rs. 90 crores. Certain other units like the Fertilizer Corporation and National Textile Corporation also need substantial additional

assistance. As a result, non-Plan loans to the public undertakings will be Rs. 159 crores more than the Budget Estimate of Rs. 250 crores only.

21. As small savings fetched more than what was anticipated, loans to State Governments towards their share of collections will also be Rs. 165 crores more than the Budget provision of Rs. 300 crores; a part of the increase is on account of the spurt in collections towards the end of the previous year.

22. Defence expenditure in the current year is estimated at Rs. 2845 crores as against the Budget provision of Rs. 2945 crores.

23. The progress of Central Plan expenditure has been somewhat uneven and overall Budget support for Central Plan expenditure is estimated to be less by Rs. 201 crores as compared to the provision of Rs. 4520 crores made for it. The major shortfalls are anticipated in petroleum, fertilizer and telecommunication projects. Oil and Natural Gas Commission will require Rs. 63 crores less due to rephasing and postponement of certain works of its off-shore programme. Oil Industry Development Board will also require Rs. 58 crores less due to shortfall in petroleum sector's outlay. Fertilizer projects will require Rs. 36 crores less as compared to the original provision of Rs. 236 crores; the shortfall relates mainly to Trombay V and Cochin Phase II units and the new gas based fertilizer plant to be set up in Maharashtra. The outlay on telecommunication projects, which is mostly financed out of internal resources, is anticipated to be Rs. 46 crores less, mainly due to delay in receipt of equipment and stores.

24. A shortfall of Rs. 25 crores is anticipated in agricultural schemes. Certain agricultural schemes have not picked up the necessary tempo owing to delays in implementation by the State Governments or in formulation of the detailed schemes and inadequacy of necessary infrastructure. These problems are being tackled. Certain schemes have, however, made good progress. Hon'ble Members would be glad to know that the food for work programme is becoming a major instrument of rural development and employment promotion and the provision of Rs. 30 crores made for the scheme has been stepped up to Rs. 100 crores and is expected to generate 40 crores man-days of work during the year. Dairy development, which will also provide gainful employment and increased incomes in the rural areas, has been allocated Rs. 19 crores more over the Budget provision of Rs. 11 crores.

25. The current Budget provides Rs. 2761 crores for assistance to State and Union Territory Plans. As Hon'ble Members are aware, States affected by floods this year suffered serious erosion of resources and would not have been able to finance their approved Plan outlays without additional assistance from the Centre. It had accordingly become necessary to provide additional Plan assistance of Rs. 325 crores to those States. Rural Electrification Corporation had also to be provided with Rs. 39 crores more from the Budget to finance its approved Plan schemes which are in the State sector. According to Revised Estimates, Central assistance for State and Union Territory Plans in the current year is placed at Rs. 3112 crores.

26. As regards receipts in the current year, collections from small saving are expected to exceed the Budget Estimate of Rs. 460 crores by Rs. 140 crores, thanks to the sustained efforts of Central and State agencies concerned. Deposits of non-Government provident funds are also estimated to be Rs. 75 crores more than the Budget Estimate of Rs. 225 crores. Gold safes, for which no credit was assumed at the Budget stage, have fetched Rs. 86 crores. Recoveries of temporary credit extended in earlier years to bilateral trading countries will also show an improvement of Rs. 75 crores following larger imports from them.

27. Dislocation of industrial production in the eastern part of the country consequent on floods this year, and decline in the profit margins of certain major public sector undertakings have adversely affected receipts from corporation and income taxes. The receipts are estimated to be about Rs. 102 crores less than the Budget Estimate of Rs. 2577 crores. Union excise and customs duties taken together show an improvement of Rs. 145 crores. While, consequent on liberalisation of import policy and larger imports to meet

domestic requirements, customs duties are expected to yield Rs. 250 crores more than the Budget Estimate of Rs. 1860 crores, Union excise duties, on the other hand, will fetch Rs. 105 crores less than the Budget Estimate of Rs. 5229 crores. This shortfall is, among other things, due to lower realisation on sugar consequent on withdrawal of duty on khandsari sugar and fall in sugar prices after decontrol. There has been shortfall in excise revenue from kerosene, man-made fibres, aluminium and copper, which is, however, more than made up by larger receipts of import duties on these commodities.

28. Utilisation of external aid has slowed down due to a shift from programme to project assistance by multilateral aid giving agencies and also allocation of a greater proportion of bilateral assistance from some countries to specific projects. In both cases, the concerned projects are slow moving and, consequently, gross aid receipts are expected to be Rs. 447 crores less than the Budget Estimates. Steps are however being taken to accelerate the pace of disbursements.

29. Taking other variations in receipts and expenditure into account the overall deficit in the current year is estimated to be Rs. 1590 crores as against the original estimate of Rs. 1071 crores. This is exclusive of the additional burden of Rs. 555 crores cast on the Centre by the loans to certain States for clearing their past deficits which, being in the nature of a book adjustment, will not have an economic impact in the current year.

Budget Estimates for 1979-80

30. I shall now present the estimates of expenditure for 1979-80.

31. This budget reflects the impact of the recommendations of the Seventh Finance Commission which have been accepted by Government. While a larger transfer of resources to States in pursuance of the award of the Commission is eminently desirable for strengthening our federal polity, it creates serious problems for the Centre's finances in the short run. This budget seeks to cope with these problems.

32. The annual Plan of the Centre, States and Union Territories for 1979-80 would be Rs. 12511 crores compared with an approved total outlay of Rs. 11649 crores in 1978-79. This represents an increase of 7.4 per cent. However, in assessing these figures Hon'ble Members should bear in mind that an estimated sum of Rs. 835 crores has been transferred as committed expenditure from the Plan side to the non-Plan side in the Central and State Plans. Taking into account this transfer, the step-up in developmental effort in 1979-80 would be of a significant order.

33. The Central Budget for 1979-80 provides a sum of Rs. 7108 crores for the Central Plan and for assistance towards the Plans of States and Union Territories. A provision of Rs. 2300 crores has been made for Central assistance towards outlays of States' Plans, Union Territories' Plans, and the sub-Plans of Hills and Tribal areas, schemes of North-Eastern Council and Rural Electrification Corporation. Inclusive of their own resources, the Plans of States, Union Territories, North Eastern Council etc. will amount to Rs. 6099 crores in 1979-80 as against an outlay of Rs. 5985 crores in 1978-79.

34. The provision in the Budget for the Central Plan amounts to Rs. 4808 crores. Together with the internal and other resources of public sector undertakings amounting to Rs. 1604 crores, Central Plan in 1979-80 will, therefore, be of the order of Rs. 6412 crores, as against Rs. 5664 crores in 1978-79.

35. Subsequent to the determination of the outlays for the Central Plan and the Plans of the States for 1979-80, a decision has been taken at the recent meeting of the National Development Council to effect some modifications in respect of Centrally sponsored schemes. The funds now allocated for some of the Centrally sponsored schemes will be released for distribution among the States on the basis of a new formula. Consequential adjustments, in the Budget provisions for 1979-80 for these schemes, will be made in the course of the year.

36. As the Hon'ble Members are aware, the objective of eradicating poverty and unemployment is basic to our new development strategy. This calls for a radical restructuring of the priorities in our Plans. Agricultural and rural development have therefore been assigned the pride of place in our Plans. But Government recognises that the requisite degree of reorientation of development plans can be achieved only over a period of time. We propose, however, to accelerate the pace and thrust of programmes which have a material bearing on agricultural growth and promotion of employment.

37. The Plan outlay on agriculture and rural development has been raised from Rs. 1754 crores in 1978-79 to Rs. 1811 crores in 1979-80. An outlay of Rs. 258 crores has been provided for accelerating the integrated rural development programme in 2000 blocks covered by any of the special programmes and in 300 other blocks not covered by any of the special programmes so far. The focus will be on the improvement of the economic conditions of small and marginal farmers, agricultural labourers, rural artisans and scheduled castes and scheduled tribes. A provision of Rs. 50 crores is being made for the food for work programme. I have no doubt that I shall have to raise this figure steeply taking into account the experience in the current year. Such an increase will, however, have no inflationary impact as we will be drawing upon accumulated stocks of foodgrains.

38. Government does not have to stress in this House the importance of irrigation for agricultural development. The outlay on major, medium and minor irrigation projects including flood control for 1979-80 will be Rs. 1488 crores compared to Rs. 1401 crores in 1978-79. Most of this outlay will be in the budgets of the State Governments. The target for the creation of additional irrigation potential in 1979-80 has been fixed at 3.2 million hectares as against a target of 2.8 million hectares in 1978-79. In order to increase the pace of development of minor irrigation, a scheme is being worked out for extending the subsidy on minor irrigation, given at present only to small and marginal farmers, to farmers whose land holding is between 2 and 4 hectares, but at a reduced rate. To this end a proviso of Rs. 10 crores is being made. The Plan provision for the minor irrigation programme will be supplemented with resources available from the Agricultural Refinance and Development Corporation. The financial support made available to the Agricultural Refinance and Development Corporation from the Central budget has been increased from Rs. 133 crores in 1978-79 to Rs. 159 crores in 1979-80.

39. In the context of the great importance we attach to rural development and employment-oriented programmes in rural areas, it is necessary to ensure that in the coming years the flow of institutional finance to rural areas will be smooth, steady and at reasonable rates of interest. In addition to many steps already taken, Government has decided to exempt the Agricultural Refinance and Development Corporation, the premier refinancing agency for agricultural term loans, from income-tax. This concession, together with other measures we are contemplating, will enable the Agricultural Refinance and Development Corporation to reduce the rate of interest at which it refines loans for minor irrigation and land development by about 1 per cent; the Reserve Bank will take corresponding steps to ensure that the full benefit of this reduction of about one per cent is passed on by the commercial banks to the ultimate borrower. As a result, farmers will find it cheaper and therefore more attractive to invest in minor irrigation and land development.

40. Hon'ble Members are aware that as part of the strategy of rural development, a National Dairy Development Programme, known as Operation Flood II, intended to raise the nutritional standards of the people, generate employment and augment incomes in rural areas through a viable subsidiary occupation had been approved earlier this year. An outlay of Rs. 32 crores has been provided in the Central Plan for 1979-80 for this programme. On completion it will provide gainful employment for about 10 million farm families and assure increased availability of milk to our people.

41. Rural electrification plays an important part in agricultural and rural development. The total outlay for the rural electrification programme will be Rs. 285 crores in

1979-80 An additional sum of Rs. 50 crores will be mobilised for this purpose through commercial banks, the Agricultural Refinance and Development Corporation and the Rural Electrification Corporation. Comparable figures in 1978-79 are Rs. 277 crores and Rs. 20 crores respectively. As against 22000 villages expected to be electrified in 1978-79, the target for 1979-80 has been set at 25000 villages.

42. With the increase in agricultural output there is an obvious need for increased storage to minimise wastage. A scheme is therefore being worked out to have subsidised storage facilities in rural areas. This will have two fold benefits: grain can be stored near the place of production thus reducing wastage and it will reduce the cost of storage for Government because godowns can be built cheaper and the cost of holding inventories will be borne by the farmers.

43. This Government is committed to the acceleration of the rural water supply programmes so as to make safe and reliable drinking water available in all problem villages. The Central Plan for 1979-80 includes a provision of Rs. 80 crores for this programme as against Rs. 60 crores allocated in 1978-79. After this Government came to power in March 1977, 18000 villages were provided with water supply in 1977-78. The target for 1978-79 is 27000. I wish to assure the House that Government will have no hesitation in allocating more funds for this purpose if the programmes make faster progress.

44. Economic exploitation and social discrimination against scheduled castes and scheduled tribes will not cease unless programmes for their development are built upon a sound economic basis. Therefore Central ministries and State Governments have been asked to incorporate a special component in their Plans for 1979-80 for these categories so that they may secure an adequate flow of benefits from the various sectoral programmes. The outlay on welfare programmes for scheduled castes and other backward classes will be Rs. 117 crores in 1979-80.

45. A provision of Rs. 70 crores has been made for the tribal sub-plan for 1979-80. This will supplement the flow of funds from State Governments under different heads of development. The States would also be receiving grants under the recommendations of the Seventh Finance Commission for providing incentives to their staff working in the difficult conditions in the tribal areas.

46. The development of village industries is an important component of the Central Plan. A provision of Rs. 193 crores has been made in 1979-80 in the Central sector as against Rs. 140 crores originally provided for in the current year. This outlay would be supplemented by suitable provisions in the State Plans and by institutional resources available on easy terms and conditions.

47. Handloom is our most important village industry. There are nearly 4 million handlooms providing employment to about 10 million people. They produced 2500 million metres of cloth in 1978-79 and the target for 1979-80 is 2700 million metres. A provision of Rs. 28 crores is being made in 1979-80 to organise weavers into cooperative societies, to enable apex cooperative bodies in this sector to do better marketing and to promote intensive development for export.

48. In keeping with the Government's policy of extending postal services in rural areas, it is proposed to open 5000 new post offices and provide 10,000 postal counters through mobile post offices in 1979-80. Outlay on telecommunications will be Rs. 359 crores in 1979-80 with greater emphasis than hitherto on extending these facilities to rural areas.

49. Care has also been taken to provide adequately for the development of the basic infrastructure on which the progress of agriculture and industries alike would be dependent. Thus the provision for power, coal, fertilizers and chemicals, minerals, petroleum, steel and roads and railways has been increased from Rs. 2733 crores in the Central Plan for 1978-79 to Rs. 3122 crores in 1979-80.

50. The growth of power production has an important role to play in the development of agriculture as well as industry. Allocation for the power sector in 1978-79 had been stepped

up substantially to Rs. 2217 crores. The tempo of development is sought to be speeded up still further in 1979-80 and an outlay of Rs. 2466 crores is being provided. The bulk of the Plan provision for power will be in the State Plans but an allocation of Rs. 382 crores is for power projects in the Central sector. A major start in 1979-80 will be the super thermal station at Farakka. It is expected that 3000 MW generating capacity will be added in 1979-80 as against 2500 MW in the current year. The facilities for distribution of power are also being improved.

51. Self-sufficiency in fertilizer production is an important objective of the Government policy. A provision of Rs. 254 crores for investment in fertilizer plants has been made in the Plan for 1979-80. This will cover expenditure on a number of on-going projects which will raise production in the public sector from 12 lakhs tonnes of nutrients this year to 20 lakh tonnes in 1979-80. Also, starts will be made on two off-shore gas based plants on the west coast and an additional gas based unit in Assam.

52. The demand for steel has increased by about 15 per cent in the current year due to increased activity and investment in the economy. The increased production of mini steel plants has averted a serious shortage which would have otherwise occurred. An outlay of Rs. 600 crores is being made for the steel sector in 1979-80. It has to be viewed in the context of the growing demand. This provision will enable work on the expansion of Bokaro and Bhilai Plants and on the new plant at Salem to be continued.

53. Coal is as basic to our development as power and there is an urgent need to raise its production. Coal production in the current year is estimated not to exceed a figure of 102 million tonnes as severe floods affected production. The allocation for the coal sector has been raised from Rs. 267 crores in the current year to Rs. 346 crores in 1979-80.

54. Oil is an equally important source of energy and Government attaches great importance to the exploration and development of oil fields so that our dependence on imported oil is minimised. The development of Bombay High will be substantially completed next year. With the commissioning of the 3 million tonne expansion at the Koyali refinery, the country's refining capacity has touched 30 million tonnes per year. Allocations to this sector in 1979-80 will be Rs. 622 crores.

55. Roads are of vital importance to the nation and a provision of Rs. 120 crores is proposed for 1979-80 for national highways, strategic roads, roads in the border areas in the north and roads of Inter-State economic importance. This will be supplemented by allocations from the State Plans to cover State highways and district and rural roads.

56. In our country urbanisation has led to a growth of slums and squatter settlements. Essential facilities like water supply, community latrines and baths, wide and paved streets and provision of street lighting have been badly lacking for these people. Government has decided therefore to pursue actively a policy of slum improvement. Against a total expenditure of Rs. 43 crores on slum improvement in 1974-78, an outlay of Rs. 190 crores has been envisaged in the period 1978-83. The States will have to push through this programme in a big way. If they undertake to mobilise additional resources for this purpose by taxing the affluent sections in the urban areas, Government will be happy to supplement their efforts. Government will examine in consultation with the States how the slum improvement programme can be accelerated so as alleviate the living conditions of the urban poor.

57. In realigning the priorities in the educational sector, Government attaches the highest importance to the education of the masses. The provision for adult education in the Central Plan for 1979-80 is being accordingly increased and comes to nearly 20 per cent of the total outlay of Rs. 84 crores for education in the Central Plan.

58. It is now widely accepted that the programmes of development of agriculture or rural industries will not make sufficient progress unless the rural population acquires the relevant skills. Very little headway has, however, been made in the training of rural youth to acquire these skills. This is partly because of a lack of an effective training programme and partly a lack of proper organisation linking skills with

capital. Since such training is an essential precondition of the success of the production programme, Government proposes to make financial provision for a programme of 'training rural youth for self employment' in the course of the year as soon as the details of such a programme are worked out.

59. There is little doubt that the growth of population at the present rate needs to be checked if economic development is to lead to a perceptible increase in the standard of living of our people. Unfortunately, as a result of the wrong approach to family planning followed in the past, this programme has suffered a serious set back. It should be our endeavour to put the newly introduced family welfare programme on a sound footing so that the national objective of reducing the birth rate to 30 per thousand in 1982-83 from the current level of 33 per thousand may be achieved. The Community Health Workers Scheme which was started in October 1977 in 741 primary health centres was a significant innovation of the Janata Government in extending elementary medical care to rural areas. It is proposed to cover a third of the country under the scheme in 1979-80 and the entire country by 1982-83.

60. Non-Plan expenditure has been limited to what is strictly necessary keeping in view the need for economy consistent with efficiency.

61. Defence expenditure is estimated at Rs. 3050 crores as against Rs. 2845 crores in the current year.

62. Provision for food subsidy at Rs. 560 crores will be Rs. 10 crores less than in the current year. Rs. 448 crores have been provided next year for fertilizer subsidies as against Rs. 319 crores in the current year.

63. Debt service charges at Rs. 2161 crores will be about Rs. 304 crores more than in the current year, the increase being mainly on account of internal debt.

64. Statutory grants to States will be Rs. 232 crores as compared to Rs. 514 crores in the current year. The provision next year is based on the recommendations of the Seventh Finance Commission. The Commission has also recommended additional grants to certain States to cover their net interest liability and for upgradation of standards of administration. I have not, at this stage, included any provision for payment of grant-in-aid for these purposes and shall come before the House with request for supplementary funds after the action programmes for schemes of upgradation are drawn up and finalised by the State Governments concerned and the net interest liability assessed as recommended by the Commission.

65. Government is sure that Hon'ble Members will share its concern at the growing volume of Government expenditure. It is therefore important to contain the growth of this expenditure and also to ensure that the funds are utilised effectively for the promotion of the common good. Government has therefore decided to appoint a Commission with suitable terms of reference to conduct a comprehensive inquiry into Government spending. It will, among other things, examine the impact of public expenditure on the promotion of growth and reduction of poverty and recommend ways and means of making public expenditure more effective in solving the problem of poverty.

66. Coming now to Receipts, gross tax revenue in 1979-80 at existing rates of taxation is estimated at Rs. 10822 crores, showing an increase of Rs. 658 crores over the Revised Estimates for the current year. Of this increase, Union excise duties will contribute Rs. 381 crores and corporation and income taxes Rs. 248 crores.

67. As mentioned earlier, substantially larger devolution of Central taxes and duties will have to be made to the States from the next financial year in accordance with the recommendations of the Seventh Finance Commission. At the present level of taxation, States' share next year is estimated at Rs. 3235 crores which is Rs. 1278 crores more than in the current year. Consequently, Centre's net tax revenue, at Rs. 7587 crores, will be Rs. 620 crores less than in the current year.

68. Market loans will yield Rs. 1850 crores as against Rs. 1653 crores in the current year. Net external assistance, after meeting repayment and interest liabilities, is estimated

at Rs. 878 crores, including drawals against new credits. Small savings collections will fetch Rs. 650 crores. Loan repayments by States, excluding ways and means advances, are placed at Rs. 554 crores as against Rs. 754 crores in the current year. The decline is due to debt rescheduling recommended by the Seventh Finance Commission.

69. The total receipts of the Central Government for 1979-80 will be Rs. 16551 crores. Total expenditure for the coming year will be Rs. 18526 crores. The overall budgetary gap at the existing rates of taxation will thus be Rs. 1975 crores.

PART B

70. I now come to my proposals on fresh taxation.

71. A gap of this magnitude cannot obviously be covered without a large tax effort. However, in addition to mobilising the required resources, my tax proposals aim at three objectives which, I think would be acceptable to everyone in this House. In a country in which the bulk of the population lives below the poverty line disparities in income have to be minimised. Such disparities lead to luxury consumption which affects the propensity to save and the will to work hard. Therefore, tax policy should seek to reduce such disparities.

72. Secondly, they aim at increasing production and avoiding waste. Poverty elimination requires primarily an increase in production. Since resources are scarce, tax policy should prevent a diversion of resources to wasteful and unproductive uses and conserve them for productive purposes. It should also discourage such consumption as is positively injurious to people's health.

73. Thirdly, they aim at eliminating unemployment and underemployment by stimulating agricultural production, by encouraging labour intensive techniques of production and by improving the competitive capacity of small scale and cottage industries in relation to large scale industry.

74. Let me take up direct taxes first.

75. I propose to raise only the rate of surcharge for Union purposes on income-tax in the case of all categories of non-corporate taxpayers from 15 per cent to 20 per cent. The effect of this proposal will be to raise the marginal rate of personal income-tax from 69 per cent at present to 72 per cent. This measure will yield an additional revenue of Rs. 46 crores in a year. The accretion during 1979-80 will, however, be of the order of Rs. 37 crores only. This is a small sacrifice I am asking the 35 lakh taxpayers, who constitute an insignificant proportion of the total population, and who receive a substantial share of the country's income, to make for their poorer fellow citizens.

76. I am aware of the views of the State Governments against recourse to surcharge for Union purposes as the revenue accruing from surcharge is not shareable with the States. But in framing my other fiscal proposals I have taken care to see that States get their legitimate share of the gains from the additional tax effort of the Centre.

77. Under the rate of schedule prescribed in the Finance Act, 1978, in cases where the taxable income exceeds the exemption limit by a small margin, the tax liability is limited to 70 per cent of the excess over Rs. 10,000. This provision operates rather harshly in some cases. In order to provide for a smoother progression in marginal cases, I propose to limit the tax payable in such cases to 30 per cent of the excess over Rs. 10,000. This will benefit individuals having incomes up to Rs. 12,000.

78. In view of the imperative need for resources, I propose to continue the Compulsory Deposit Scheme for Income-tax Payers for a further period of two years. This will generate additional resources to the tune of Rs. 160 crores during the financial year 1979-80.

79. Inequalities of wealth have even less justification than inequalities of income. I, therefore, propose to raise the rates of wealth-tax on high slabs of net wealth. The rate will now be 3 per cent, as against the current rate of 2.5 per cent, on the net wealth between Rs. 10 lakhs and Rs. 15 lakhs and 5 per cent, as against 3.5 per cent, on the net wealth over Rs. 15 lakhs. The rates of wealth tax on slabs upto Rs. 10 lakhs will remain unchanged. There will be

corresponding changes in the rates applicable to Hindu undivided families having one or more members with independent net wealth exceeding the exemption limit. These changes will yield an additional revenue of Rs. 6.6 crores in a year. Since, however, the new rates of wealth-tax will apply prospectively from the assessment year 1980-81, there will be no accretion to revenue during 1979-80.

80. It has to be recognised that by merely adjusting direct tax rates we cannot reduce disparities in income and wealth to tolerable levels. As the House knows, tax evasion which is the basic cause of generation of black money greatly affects the progressive impact of direct taxes. Black money is a corrosive influence which works through the entire economy. It is important that this scourge is fought through the effective implementation of our tax laws. I wish to assure the House that I shall address myself to this task with the utmost zeal and vigour.

81. As I am raising the surcharge on income-tax on personal incomes, I think the corporate sector should also be required to contribute a little more to the exchequer. I accordingly propose to raise the surcharge on income-tax in the case of companies from 5 per cent to 7.5 per cent. This will not cast a heavy burden on them, because the effective rate of taxation on corporations is lower than the nominal rates. This measure will yield an additional revenue of about Rs. 3.5 crores in a year. The accretion during the year 1979-80 will, however, be of the order of Rs. 2.8 crores only.

82. The scheme of taxation of capital gains was modified in 1977 in several directions. One of the changes made was to provide for exemption from income-tax on long-term capital gains if the sale proceeds of any asset were reinvested within six months in certain preferred assets. Since asset owners secure capital gains largely through no effort on their own part, this exemption confers an unfair advantage on asset holders as compared to income earners and thus contributes to the disparity in society. I, therefore, propose to withdraw this exemption of capital gains in respect of transfers made after 28th February, 1979. This measure will yield an additional revenue of Rs. 1.4 crores annually. Since, however, advance tax is not payable in respect of capital gains, there will be no accretion to revenue during the year 1979-80.

83. The present concessions in respect of long-term savings through life insurance premia, provident fund contributions and other approved forms of savings, though they subserve certain desirable social and economic objectives, give a disproportionately large tax benefit to taxpayers in higher income brackets. At present, 100 per cent deduction is allowed in respect of first Rs. 5,000 of qualifying savings, 50 per cent on the next Rs. 5,000 of such savings and 40 per cent on the balance. Under my proposal, while the first Rs. 5,000 of qualifying savings will continue to be eligible for 100 per cent deduction the deduction in respect of the next Rs. 5,000 of such savings will be reduced to 35 per cent and in respect of the balance to 20 per cent. This measure will yield Rs. 9.6 crores annually. The accretion during the financial year 1979-80 will, however, be Rs. 7.6 crores.

84. I propose to lower the threshold for payment of advance tax by the registered firms from Rs. 30,000 to Rs. 20,000. This measure will yield an additional revenue of Rs. 1.2 crores during 1979-80.

85. The large scale unemployment in the country requires the promotion of labour intensive techniques instead of capital intensive techniques. While it may be true that in some industries the choice of techniques is limited, our preference should be for labour intensive methods of production wherever feasible. Our fiscal laws and tax concessions in particular should be so designed as to foster production techniques which enlarge opportunities for employment.

86. I, therefore, propose to appoint an Expert Committee of economists and tax administrators to study the impact of concessions provided for in our tax laws—particularly those relating to corporation tax and Central Excise—on the techniques of production used in industry and make recommendations which will encourage the adoption of labour intensive methods of production. The composition of the Committee and its terms of reference will be settled soon and it

will be asked to submit its Report with the least possible delay.

87. One of the tax concessions which is related to the employment of capital is the "tax holiday" provision in the Income-tax Act. This concession is at present available in respect of all industrial undertakings that go into production before 1st April, 1981. I propose to withdraw this concession in the case of industrial undertakings engaged in non-priority industries listed in the Eleventh Schedule to the Income-tax Act, if they go into production after 31st March, 1979.

88. In recent years, commercial banks, particularly public sector banks have been asked to reach out into the rural areas and to expand rural credit in order to promote rural banking and to assist the scheduled commercial banks in making adequate provisions from their current income to provide for risks in rural advances. I propose to amend the Income-tax Act to grant a deduction in respect of provisions made for bad and doubtful debts by scheduled commercial banks relating to advances made by their rural branches. Such a deduction will, however, be limited to 1.5 per cent of the aggregate average advances made by the rural branches. This measure will result in a revenue loss of Rs. 1.2 crores during 1979-80 but it will be in a good cause.

89. I have earlier referred to the exemption from the corporation tax which I wish to extend to the Agricultural Refinance and Development Corporation. This is in line with a similar exemption already being enjoyed by the Industrial Development Bank of India. This decision will result in a revenue loss of Rs. 5 crores annually. The loss during 1979-80 is estimated at Rs. 10 crores because advance tax paid during 1978-79 also is refundable.

90. At present, expenditure incurred by companies and co-operative societies on approved programmes of rural development qualifies for deduction in computing their taxable profits. For this purpose, the programme has to be approved by the "prescribed authority", which is an Inter-Ministerial Committee headed by the Secretary, Ministry of Agriculture and Irrigation. Companies and co-operative societies have shown considerable interest in rural development programmes. To expedite the clearance of such schemes of rural development, I propose to provide that they will henceforth be approved at the State level by a Committee consisting of the Commissioner of Income-tax and a senior officer of the State Government nominated by it.

91. I also propose to exempt from income-tax donations made by tax-payers to approved institutions engaged in imparting training to persons to equip them for implementing rural development programmes.

92. At present, taxpayers engaged in business or profession alone are entitled to 100 per cent deduction in respect of donations made to approved institutions engaged in carrying out programmes of rural development. I propose to extend this concession to other categories of taxpayers as well. A similar dispensation will be extended to donations for scientific research made to approved scientific research associations, universities, colleges and other institutions.

93. It is also proposed to provide that insurance premia paid by federal milk co-operative societies for insuring cattle belonging to members of affiliated primary co-operative societies shall be allowed to be deducted in computing their taxable profits.

94. In order to promote the cultivation of mushrooms, it is proposed to exempt from income-tax one-third of the income derived from the business of mushroom growing under controlled conditions, or Rs. 10,000 whichever is higher.

95. As Hon'ble Members are aware, the Finance (No. 2) Act, 1977 has conferred exemption from income-tax on the Khadi and Village Industries Commission. It is now proposed to exempt from income-tax the income of the State Khadi and Village Industries Boards set up under the State Acts.

96. Consumer co-operative societies have been doing commendable work in supplying goods to consumers at reasonable prices. In order to encourage the development of such societies so that they can play a proper part in the public distribution system that is sought to be developed, it is proposed to raise the quantum of tax-exempt profits in the case

of such societies from the present level of Rs. 20,000 to Rs. 40,000.

97. The scope of section 35B of the Income-tax Act relating to export markets development allowance was curtailed last year. I have referred earlier to the decline in exports in the current year and the need to promote them. Therefore to enable exporters to develop export markets on a long-term basis, it is proposed to liberalise the scope of the export markets development allowance. A weighted deduction under section 35B of the Income-tax Act will now be available to all exporters at a uniform rate of 133.3 per cent of the qualifying expenditure. For this purpose, expenditure on advertisement or publicity outside India in respect of the goods, services or facilities dealt in or provided by the taxpayer in the course of his business will be included in the qualifying expenditure. This concession will result in a revenue loss of about Rs. 5 crores annually. The loss in 1979-80 will, however, be of the order of Rs. 4 crores.

98. In order to encourage the writing of University level text books in Hindi and other Indian languages, I propose to allow a deduction equal to 25 per cent of the income derived by the authors of such books. Authors of dictionaries and encyclopaedias in these languages will also get the benefit of a similar deduction in the computation of their taxable income. This concession will be available for the assessment year 1980-81 and four subsequent years.

99. While I want to step up the drive against tax evasion, I also would like to promote greater expedition in the settlement of income-tax cases. At present, the Income-tax Settlement Commission is debarred from proceeding with a case if the Commissioner of Income-tax objects to the application being proceeded with on certain grounds. The Direct Tax Laws Committee has recommended that the application for settlement should be rejected only after the Commission is satisfied that the objection has been raised by the Commissioner on proper and valid grounds. It is proposed to implement this recommendation subject to the safeguard that before overruling the objection raised by the Commissioner of Income-tax, the Settlement Commission should hear him.

100. The Direct Tax Laws Committee has also proposed certain amendments to the Income-tax Act and the Wealth-tax Act with a view to plugging some loopholes in the provisions relating to prevention of tax avoidance through intra-family transfers of income and wealth. I have accepted their recommendations and given effect to them through the Finance Bill.

101. As I mentioned earlier the second objective of my proposals is to prevent the life style of the affluent sections from having an adverse impact on saving and investment through the demonstration effect. In this connection, the lavish manner in which expenditure is incurred on accommodation and entertainment in luxury hotels calls for serious notice. With a view to checking such conspicuous consumption in luxury hotels, it is proposed to levy a new tax on the gross receipts of hotels. Since it is my intention that States should continue to levy sales tax as hitherto on items of food and drink supplied to guests in hotels, the sale proceeds of these items will not be included in the tax base. The details of this new measure are being worked out and the necessary legislation in this regard will be introduced in Parliament soon.

102. Other changes being made in the Income-tax law through the Finance Bill are of minor significance and are largely in the nature of clarification and rationalisation of existing provisions.

103. The total addition to revenue from all these tax measures will be Rs. 101.2 crores in a full year and Rs. 58.6 crores during 1979-80. Of this, about Rs. 12 crores will accrue to the States as their share in 1979-80. Besides, additional resources of Rs. 160 crores will accrue in 1979-80 from the continuance of the Compulsory Deposit Scheme for Income-tax Payers.

104. I now turn to indirect taxes.

105. I would like to straightforwardly indicate the more significant reliefs in excise duties which I propose to provide. The Central excise duties on all chemical fertilizers, will be reduced to 50 per cent of the existing rates. This will mean that the basic Central excise duty on urea, which is the

most important chemical fertilizer, will be reduced from 15 per cent ad valorem to 7-1/2 per cent ad valorem; that on single and triple super phosphate fertilizer will be reduced from 7.5 per cent to 3.75 per cent ad valorem. This reduction will also be correspondingly reflected in the countervailing duties leviable on imported chemical fertilizers. With this change, it should be possible to reduce the price of urea by about Rs. 100 per tonne. The prices of other kinds of fertilizers will also become lower with reference to the excise duty relief now announced. This decision would result in a sacrifice of revenue of Rs. 75.6 crores under Central excise and Rs. 30 crores under customs.

106. Although the number of electric pumpsets is increasing rapidly with increasing rural electrification, farmers have still to use pumpsets driven by diesel engines in large parts of our country. As a measure of relief to this large class it is proposed to reduce the excise duty on light diesel oil from the existing level of Rs. 155.72 per kilolitre to Rs. 75 per kilolitre. Government is aware that only 45 per cent of this oil is used in the agricultural sector. Since it is difficult to monitor end use and a significant quantity of even the balance is used for generating power and by small industry, it is proposed to extend the benefit of this reduction in excise duty to all users without any distinction. The loss to the exchequer on account of this concession will be Rs. 12.40 crores per annum.

107. It is also proposed to exempt power tillers imported by State Agro-Industries Corporations and the Central Government totally from customs duty as these implements can promote agricultural production in small holdings. Hon'ble Members may be aware that indigenously manufactured power tillers are already exempt from Central excise duties.

108. Pipes made of PVC resins can reduce seepage and wastage of water in fields and thereby increase the effectiveness of irrigation. Since I wish to make this raw material available at cheaper prices for the manufacture of PVC pipes for irrigation and at the same time prevent a misuse of concession for other purposes, it is proposed as an experimental measure, to exempt PVC resins imported for the purpose from the customs duties as soon as the modalities of a scheme which will serve both the objectives have been worked out.

109. I would also refer to the relief in the field of drugs and medicines. It is proposed to fully exempt from customs duties 22 specified bulk drugs required for the formulation of life saving drugs, and to reduce the customs duty on 17 specified bulk drug intermediates from a total of 75 per cent ad valorem to 25 per cent ad valorem. On the excise side, it is proposed to exempt patent or proprietary medicines, including life saving drugs, from the levy of the special excise duty. Taking these measures together, the revenue sacrifice is estimated to be of the order of Rs. 7.04 crores a year.

110. I now turn to a proposal of far reaching significance. This concerns unmanufactured tobacco, excise on which dates back to the year 1943. This levy brings the excise machinery into contact with a large number of growers and licensees. It is proposed to completely exempt unmanufactured tobacco from excise duties, including additional excise duties and thus, relieve at one stroke, nearly a million tobacco growers, curers, small dealers and warehouse licensees from excise control. I have no doubt that this bold decision to do away with a vexatious levy—a legacy of the colonial era—will be widely welcomed by farmers in the tobacco growing tracts of our country. This measure would involve loss of central excise revenue of the order of Rs. 121.20 crores. I, however, propose to recoup Rs. 115.71 crores of this loss through suitable upward adjustments in the rates of duties on manufactured tobacco products.

111. I shall touch upon cigarettes later. For the present, I shall deal with the other manufactured tobacco products. In respect of branded biris, the present tobacco stage duty plus biri duty comes to about Rs. 3 per thousand biris; it is proposed to fix a consolidated rate of Rs. 3.60 per thousand branded biris. Unbranded biris produced by manufacturers of both branded and unbranded biris will pay the same duty. At present, unbranded biris are exempt from biri duty; but they are subject to tobacco stage duty which

works to about ninety paise per thousand biris. It is proposed to levy a nominal consolidated duty of Rs. 1.60 per thousand on other unbranded biris. However, to provide relief to the small manufacturers of unbranded biris alone it is proposed to exempt manufacturers who produce only unbranded biris from payment of duty on their clearances of the first 60 lakh biris in a year. It is also proposed to make suitable upward duty adjustments in respect of chewing tobacco, snuff and smoking mixtures. It is also proposed to levy a duty of 20 per cent ad valorem on branded manufactured hookah tobacco.

112. As an interim measure, it is proposed to provide for suitable relief in product stage duty in the case of those products manufactured out of duty-paid unmanufactured tobacco except in respect of smoking mixtures and manufactured hookah tobacco.

113. Hon'ble Members will recall that the Indirect Taxation Enquiry Committee under Shri L. K. Jha submitted Part II of its final report in January, 1978. The Committee has indicated the broad lines on which rationalisation of the excise tariff should be attempted both in the short term as well as in the long term. I have given close and careful consideration to the Committee's recommendations. A major restructuring of the excise tariff has to be ruled out in view of the need for resources and on other pragmatic considerations. Also there is reason to apprehend that a major departure from the present pattern of excise taxation may upset the balance between different sectors of production. However, as part of the follow-up action on the Committee's recommendations, I have attempted to restructure the excise duty rates on a wide range of consumer and finished products.

114. Let me state at the outset that as a result of this restructuring, the number of effective excise duty rates have been reduced from 28 to 16 in respect of commodities covered by the present exercise. I have also availed of this opportunity to introduce further progression in the duty structure and stepped up the duty on quite a few luxury and semi-luxury items. Excise duties are being increased on cosmetics and toilet preparations (other than perfumed hair oil), from 63 per cent to 100 per cent, on air-conditioners from 105 per cent to 110 per cent, on parts of refrigerating and air-conditioning machinery from 105 per cent to 125 per cent, on stereo and hi-fi equipment from 36.75 per cent to 40 per cent, on higher priced television sets from 21 per cent to 30 per cent, on higher priced radios and radiograms from 36.75 per cent to 40 per cent. I have maintained the duty differential of 15 per cent ad valorem in respect of those electronic products where such duty differential exists for small scale units.

115. I have also taken this opportunity to step up suitably the duty rates on durable consumer articles on the consideration that the outlay on these items is mostly of a non-recurring nature and the incidence of duty is spread over a period of time. In this category, it is proposed to increase excise duties on pressure cookers from 10.5 per cent to 15 per cent, on steel furniture from 21 per cent to 25 per cent, on domestic electrical appliances from 26.25 per cent to 30 per cent, and on safes and strong boxes from 21 per cent to 35 per cent.

116. I have also selected some consumer items like soap, tooth paste, tooth brush and detergents, for increase in duties taking care, at the same time, to see that the goods produced by the small units in the decentralised sector are not adversely affected by this increase. Excise duties will go up on household and laundry soap from 5.25 per cent to 20 per cent, on low priced toilet soap from 10.5 per cent to 15 per cent, on high priced toilet soap from 15.75 per cent to 20 per cent, on detergents from 13.13 per cent to 20 per cent and on tooth paste from 10.5 per cent to 25 per cent. It is also proposed to impose a 25 per cent duty on tooth brushes. Let me state clearly that my objective in increasing the rates on these commodities is partly to ensure that the small-scale manufacturers, with the advantage of duty exemption, are able to increase their share of the market for these products.

117. Among food items, I have avoided imposing any further burden on articles of mass consumption such as processed edible oils or vanaspati. I have, in fact, reduced the duty on vanaspati by exempting it from special excise duty. However, I have considered items like prepared or preserved food, instant coffee, biscuits, processed cheese, cocoa powder, chewing gum and chocolate as fit for further increases, bearing

in mind the sections of the society that consume such items. Thus, excise duties are increased on instant coffee from 21 per cent to 25 per cent, on prepared or preserved food, biscuits and processed cheese from 10.5 per cent to 15 per cent, and on cocoa powder, chewing gum and chocolates from 10.5 per cent to 20 per cent. In aerated waters, it is proposed to increase the duty rate on plain soda from 15.75 per cent to 20 per cent. In respect of other aerated waters I propose to have two rates—one of 60 per cent for those containing caffeine and the other of 30 per cent for those not containing caffeine. It is also proposed to withdraw the present concessional rate applicable to clearances of the first 50 lakh bottles in a financial year. However, the existing exemptions in respect of aerated waters in favour of small manufacturers will continue.

118. In restructuring the duty rates on consumer products, I have reduced the incidence on a number of items by exempting them from special excise duty. I would like to make particular mention of the duty reduction from 42 per cent to 30 per cent on fluorescent lighting tubes, which are widely used for street lighting and which help in reducing the consumption of electricity. It is also proposed to extend the scope of the present excise exemption for low priced footwear valued upto Rs. 5 per pair to footwear valued upto Rs. 10 per pair.

119. I have also rationalised the rates applicable to personalised modes of transport, Mopeds, which are used by comparatively less affluent people and consume less fuel, will bear a lower duty of 10 per cent as against the existing duty of about 13.1 per cent. Scooters, motor cycles and three-wheelers will bear 20 per cent as against the existing level of 13.13 per cent, while cars will pay duty at 25 per cent as against the existing rate of 18.38 per cent. The concessional rate applicable to cars used as taxis and auto-rickshaws will be increased from 10 per cent to 15 per cent. The rate on commercial vehicles will also go up marginally from 13.1 per cent to 15 per cent as part of the scheme of rationalisation.

120. In manufactured inputs, I have mainly confined myself to streamlining the existing rates having regard to their usage and their relative importance. The details of these changes are contained in the Budget papers.

121. Another tax reform suggested by the Indirect Taxation Enquiry Committee is to extend proforma credit facilities in respect of the duty paid on inputs used in the manufacture of finished products. Presently, such facilities are available in a limited area. Wide extension of these facilities as recommended by the Committee would have major revenue implications apart from throwing additional administrative burden in working these procedures. However, industry has been urging that this measure be given a trial. I propose to extend, as an experimental measure, the provision of proforma credit to some of the products of the engineering industry, where the incidence of duty on inputs is perceptible. While doing so, I have also proposed upward rate adjustments in respect of some of the final products. The details of these changes are available in the Budget papers.

122. The net revenue effect of the proposals for restructuring the Central excise tariff, along with a few minor changes in some of the items affected, is a gain of about Rs. 100 crores in a full year.

123. I now turn to substantive proposals to raise resources.

124. On the excise side, the most important proposals relate to a few major products of the petroleum group. Hon'ble Members are aware that the OPEC countries have announced a phased programme of increase in the price of crude oil. We are still, to a significant extent, dependent on imports of crude oil and the anticipated increase in the out-flow of foreign exchange consequent on the increases in crude prices is substantial. After the initial drop in consumption of petroleum products in the wake of the steep increase in crude prices in the year 1973, consumption has registered a sizable upward trend. From the point of view of evolving a viable energy policy which minimises the strain on our foreign exchange resources, I have no doubt that it is essential to restrain the consumption of the more important petroleum products. My revenue proposals have been formulated keeping this important objective in mind.

125. It is proposed to raise the Central excise duty on motor spirit from the existing level of Rs. 2253.88 to Rs. 2750 per kilolitre. Since the bulk of the consumption of petrol is by the upper classes in society I have no regrets in doing this. I also propose to raise the duty on high speed diesel oil from the existing level of Rs. 404.04 to Rs. 500 per kilolitre because of the rapid growth in its consumption.

126. As Hon'ble Members are aware, kerosene was being used, in the past, to adulterate high speed diesel oil when there was a price differential in favour of kerosene. It has been our endeavour in the last few years to check this tendency by maintaining, as far as possible, parity between the rates of duty on these two products. Besides, we have had, in the recent past, to rely heavily on imports of kerosene. Bearing these considerations in mind, I propose to increase the duty on kerosene from the existing level of Rs. 408.19 to Rs. 500 per kilolitre. I also propose to effect a sympathetic increase in the rate of duty of liquified petroleum gas, which is primarily used as cooking fuel in urban and semi-urban areas, from the existing level of Rs. 262.50 per metric tonne to Rs. 400 per metric tonne.

127. My proposals relating to the petroleum products are expected to yield an additional revenue of Rs. 223.25 crores under Central excise and Rs. 55.7 crores under customs.

128. Next, it is proposed to increase the rate of duty on the residuary heading Item 68 of the Central Excise Tariff from the existing level of 5 per cent to 8 per cent ad valorem. This will yield an additional revenue of Rs. 100 crores. As Hon'ble Members are aware, there is already a provision for giving set off of the duty paid on goods falling under Item 68 which are used in the manufacture of other excisable goods. The increased levy should, therefore, not have any appreciable cascading effect.

129. As the House is aware, small scale manufacturers producing goods falling under Item 68, whose clearances of all excisable goods during the preceding year had not exceeded Rs. 30 lakhs, presently enjoy exemption from duty payable on their first clearances upto a value of Rs. 30 lakhs. There have been persistent representations that in computing the eligibility of a small scale unit for this concession, the value of goods falling under Items other than Item 68 should be excluded. There have also been demands that clearances for exports should be excluded so that the units in the small scale sector are encouraged to step up their export efforts. I accept the validity of these demands. Keeping these as well as the proposed increase in duty under Item 68 in view, I propose to rationalise the existing scheme of exemption. Under the revised scheme which would be effective from 1st April, 1979, small scale manufacturers whose clearances for home consumption of goods falling under Item 68 in the preceding financial year did not exceed Rs. 30 lakhs would enjoy complete exemption from the duty payable under Item 68, on their first clearances of a value upto Rs. 15 lakhs; they would pay duty at 4 per cent, which is half of the rate of duty proposed for this item, on clearances between Rs. 15 lakhs and Rs. 30 lakhs.

130. As the Hon'ble Members are aware, the scheme of excise duty concession to encourage higher production in selected industries, which was announced in the year 1976, is due to expire on 31-3-1979. I do not propose to continue the scheme beyond this date. This withdrawal is expected to yield an additional revenue of Rs. 40 crores.

131. I have also taken this opportunity to review a number of existing notifications and I propose to modify or withdraw some of them. The details of this will be found in the Budget papers.

132. In my search for additional resources I have, of necessity, to fall back upon the old faithful, cigarettes. I have already referred to the withdrawal of the duty on tobacco at the unmanufactured stage which is borne by cigarettes. I now propose to adjust the rate structure on cigarettes in such a way as to further secure an additional sum of Rs. 60 crores from this item. Taking into account the revenue expected to accrue from this measure and the recasting of the rate structure applicable to the manufactured tobacco products, which I have referred to earlier, the States' share in respect of additional excise duty in lieu of sales tax will go up by Rs. 18.31 crores a year.

133. As Hon'ble Members are aware, the excise duty mechanism has been used consciously to encourage the production of matches in the non-mechanised sector. I propose to carry this process farther by stepping up the duty on matches produced by the mechanised sector from the existing level of Rs. 4.83 per gross boxes of 50 matches to Rs. 9.20. I also propose to round off the existing level of duty applicable to the non-mechanised sector, other than cottage units, from the existing level of Rs. 4.52 to Rs. 4.50. As regards cottage sector units. It is proposed to reduce the duty applicable to them from Rs. 3.36 to Rs. 1.60. I am sure this package of measures will result in a further accelerated growth of the non-mechanised sector in general and cottage units in particular. The additional revenue yield from this measure is expected to be of the order of Rs. 8 crores during a year.

134. Machine-made carpets produced in a few organised units constitute an item of elite consumption. I can see no justification for encouraging this line of production when we have a large number of traditional carpet weavers whose skills have won international renown. I would not like the livelihood of these weavers to be threatened by the proliferation of machine-made carpets. I, therefore, propose to impose a duty of 30 per cent on such machine-made carpets. Handmade carpets will be totally exempt from this levy. The estimated additional yield from this proposal is Rs. 1.9 crores.

135. Consistent with the above approach, with a view to encouraging labour oriented non-power processing sector of the cotton textile industry, it is proposed to withdraw the concessional rate of 8 per cent ad valorem on power-processed white powerloom cotton fabrics of finer varieties so that such fabrics also pay the same rate of 12 per cent ad valorem as is applicable to other power processed fabrics.

136. This Government is committed to the encouragement of the handloom sector. The competitive capacity of handloom fabrics in relation to fabrics produced by powerlooms and composite mills has to be improved further. It is therefore, proposed to increase the excise duty on cotton and cellulosic spun yarn of finer counts used by composite textile mills and powerlooms by about 10 per cent of the existing rates. Details of these changes are available in the Budget papers. Additional revenue expected from these measures is about Rs. 10 crores.

137. The special duties of excise imposed as a part of the 1978 Budget are due to expire on 31-3-1979. It is proposed to continue these levies for another year at the existing rate of 1/20th of the effective basic excise duties. However, it is proposed to exempt from this levy items in respect of which rates have been restructured as well as the new levies; the existing exemption in respect of electricity, coal and Item 68 will also be continued.

138. I shall now deal with the proposals concerning customs duties. The most important of them relates to withdrawal of the existing exemption from countervailing duties of customs applicable to imported goods, which attract classification under item 68 of the Central Excise Tariff. When this residuary entry was introduced in that Tariff in 1975, imported goods were exempt from the corresponding countervailing duty customs. This exemption which was initially granted when the excise duty on indigenous goods was 1 per cent ad valorem has continued, even though the rate has successively been stepped up to 5 per cent. As I have already stated, I have proposed a further increase in the Central excise duty under Item 68, from 5 per cent to 8 per cent ad valorem. In this context and as a measure of protection to the indigenous goods classifiable under Item 68, it is proposed to withdraw the existing exemption in respect of imported goods. In withdrawing this exemption, however, I have not proposed any change in the duty in regard to project imports and also the items of machinery on which the customs duty was, in the recent past, reduced to 25 per cent ad valorem on the consideration that such machinery is not indigenously produced. This measure will yield an additional revenue of Rs. 96 crores by way of countervailing duty.

139. In the context of the sizable gap between supply and demand of edible oils, substantial imports of these oils have taken place in the past and are continuing. As a means of assuring remunerative prices to indigenous producers of oil seeds, it is proposed to levy basic customs duty on palm oil, rapeseed oil, soyabean oil, sunflower oil and palmolein oil at 12-1/2 per cent ad valorem. They will, however, be

exempt from auxiliary and countervailing duties. This measure is expected to yield an additional revenue of Rs. 33.5 crores.

140. It is proposed to continue the auxiliary duties of customs for the next financial year at the existing levels.

141. Taking Union excise duties and customs duties together, my proposals will lead to a net revenue gain of Rs. 606.14 crores in a full year, of which Rs. 413.15 crores will accrue to the Centre and Rs. 192.99 crores to the States.

142. Where changes are proposed to be made by notifications, effective from the 1st March, 1979, copies of such notifications will be laid on the Table of the House in due course.

143. Members are aware that in respect of every international journey paid for in Indian currency, Foreign Travel Tax is being collected from passengers. In order to simplify the administration of the tax, and to guard against the possibility of evasion, I propose to revise the scheme and replace the ad-valorem levy with a specific one. The new arrangements will be brought into force as soon as possible after legislation in this behalf is enacted. This measure will not have any significant revenue effect.

144. I have now a few words to say on behalf of my colleague, the Minister of Communications. As Hon'ble Members are aware, the unit costs of a number of our postal services exceed the revenue they fetch. Moreover, the modernisation of telecommunication services involves large capital investment. These factors necessitate an increase in postal and telecommunication tariffs. A memorandum showing the proposed tariffs is being circulated along with the Budget papers. The letter card (inland letter) and the letter will cost five paise more. The rate for the post card has been left untouched. As regards telecommunication tariffs, the ordinary telegram of 8 words will cost Rs. 2.25 as against Rs. 2 at present and each additional word will cost 30 paise as against 25 paise at present. The rate of Press telegrams will however remain unchanged. Local call charges, beyond 1750 calls per quarter, will be 40 paise per call, as against 30 paise at present. I will not go into other details which are given in the memorandum. The tariff revisions, which will be given effect to from a date to be notified by the Government after the Finance Bill is passed, are estimated to result in additional revenue of

Rs. 57.96 crores per annum. The yield during 1979-80 is placed at Rs. 48.30 crores and has been accounted for in estimating the internal resources of the Posts and Telegraphs.

145. Our tax effort will bring in about Rs. 665 crores, of which Rs. 205 crores will accrue to the States leaving Rs. 460 crores with the Centre. Taking also into account Rs. 160 crores of accretions compulsory deposits by income-tax payers, there will be a residual deficit of Rs. 1355 crores, which I propose to leave uncovered. I have assessed carefully the inflationary potential of a deficit of this size. The large food output of the current year, the large stocks of food and other commodities we have, the large volume of foreign exchange reserves and a continuation of the current supply management and restrictionist monetary policies give me confidence that we shall be able to maintain reasonable price stability in the coming year also.

146. With this I have come to the end of my labours. I have attempted in this budget to put the maximum emphasis on agricultural and rural development and labour intensive industry, because it is now accepted by all that only that way can we eradicate poverty and unemployment in the country. I have, however, not neglected large industry and infrastructure in the process. On the contrary, I have positively encouraged them. But I have no sympathy with those industries which cater to the wants of the rich. We can have no room for production which caters to the rich and is thus a visible manifestation of the disparities which exist in our society.

147. The elimination of the kind of poverty which exists in our country cannot be achieved overnight. It is a long process which involves large investment through the mobilisation of surplus resources wherever they exist in society, better organisation and the development and transfer of appropriate knowhow to millions of small persons engaged in agriculture and allied occupations and village industries throughout the country. The ultimate objective is not merely to raise the standard of living of the poor but to build a society of men and women with skills, resources, imagination, and above all, hope. I like to think that this budget is a small step in that direction. But its success really depends upon a national consensus about the desirability of the objective and the need to work hard for it and a willingness on the part of the powerful and affluent sections of society to make the necessary sacrifices. I seek the help of this House in achieving such a consensus and securing the required sacrifices.

A. C. TIWARI, Jt. Secy.

